श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि ग्रंथमाला ग्रंथांक ३५

षड्द्रव्य विचार.



रचयिता

श्रीमन् बुद्धिसागर सूरिश्वरजी



छपावी प्रसिद्ध करनार

श्री अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडळ

हा. वकील मोहनलाल हिमचंद पादरा.



आवृत्ति त्रीजी प्रत १०००

सं १९८४ इ स १९२८

किंमत ०-४-०

निवेदन.

आ लघु पण उपयोगी ग्रन्थनी त्रीजी आवृत्ती बहार पाडता आनंद थाय छे

आ ग्रंथ सद्गत गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजीए संवत १९५८ मां लखेलो तेनी पहेली आवृत्ति सं. १९६९ नी सालमां अने बीजी आवृत्ति सं. १९७२ नी सालमां श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिश्वरजी ग्रन्थमाळा ग्रन्थांक ३५ तरीके प्रगट थयल तेनी तमाम नकलो खपी जयाथी अने मागणी चालु रहे वाथी आ त्रीजी आवृत्ति प्रगट करवामां आवी छे

आ ग्रन्थनी त्रीजी आवृत्ति काढवानी जरुर पडवायी तेमज श्री जैन श्वे०मूर्तिपूजक न बोर्ड तरफथी लेवाती धार्मिक हरीफाइनी परीक्षाना अभ्यास क्रममा आ ग्रन्थ हालमा

ज दाखल करेल होवाथी तेनी उपयोगीता सिद्ध थाय छे

आ ग्रन्थ छपाववामां पादराना शा. डाह्याभाई होमचंदनी सद्गत पुत्री सौ. म्हेम हीलावतीना श्रेयार्थे-रु. १००) नी मदद आपवामां आवी छे, ते माटे तेमनो आभार मानो विस्मीप होय

पादरा फागण शुद ११ सं. १९८४
श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ.



उद्देश.

श्री तीर्थंकर महाराजाए समवसरणमां बेसी भव्यजीवोना हित भणी षड्द्रव्यनुं स्वरूप कथन कर्युं ते षड्द्रव्य स्वरूप एवुं छे के-ते जाणीने तेनी श्रद्धा करवाथी सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे जीवादि नव तत्त्वनो समावेश पण षड्द्रव्यमां थइ शके छे ए षड्द्रव्यनुं विशेष स्वरूप सूत्रोमां छे तेमांथी यत्किंचित् आ ग्रन्थमां लखवामां आव्युं छे

श्री तीर्थंकर महाराजाए १ द्रव्यानुयोग २ गणितानुयोग ३ चरणकरणानुयोग अने ४ कथानुयोग ए चार अनुयोग कथन कर्या छे तेमां द्रव्यानुयोग विशेष करी आत्माने हितकारक छे जेम जेम द्रव्यानुयोगनुं विशेष विशेष स्वरूप जाणवामां आवे छे तेम तेम सम्यक्त्वनी शुद्धि थाय छे, षड्द्रव्यनो द्रव्यानुयोगमां समावेश थाय छे अने तेनुं स्वरूप वीतराग वचनानुसारे जाणवाथी अने

तेनी श्रद्धा करवाथी सत्वर मोक्ष प्राप्त थाय छे, अने अन्य मतवादीओनां तत्त्व असत्य भासे छे माटे तेनुं जाणपणुं करवानी आवश्यकता छे आ ग्रंथ रचवानुं—

मुख्य प्रयोजन.

ए छे जे हुं सुरतथी विहार करी पादरा गामे आव्यो त्यांना श्रावक वकील मोहनलाल हीमचंदनो समागम थयो तेमने षड्द्रव्यनुं स्वरूप जाणवानी जीज्ञासा थता विनंती करवाथी पूर्वाचार्यो कृत ग्रन्थोमांथी उद्धरीने आ षड्द्रव्य विचार प्रबंध लखी तेमने समजाव्यो, तेथी तेमने घणा हर्ष थयो, अने जैन तत्त्वो उपरनी श्रद्धा दृढ थइ तेमने पोताने आ ग्रन्थथी घणो लाभ थयो तेम बीजा भव्य जीवोने थाय एम जाणी आ ग्रंथ छपाववा तेओए अनुमती मागी ते योग्य लागवाथी आपी छे

क्षमापना.

आ ग्रन्थमां कोइ ठेकाणे मतिदोषथी २, थइ होय तो ते माटे पंडित पुरुषोए

क्षमा करी सुधारशो " शुभे यथाशक्ति यत नीय " ए न्यायने अनुसरी में आ प्रयास कर्यो छे, तेमा काइ वीतराग वचनथी विरुद्ध लखायु होय ते सबधी मिच्छामि दुक्कड दउ छु

भलामण

आ ग्रन्थनो विषय गहन होवाथी गीतार्थ समक्ष समजीने वाचवाथी हितकर थशे अने करेलो प्रयत्न सफल थयो गणाशे

आशिर्वाद.

भव्य जीवो आ ग्रंथ वाची व्यवहार अने निश्चयपूर्वक आत्म साधन करी परमात्मपद (मुक्तिपद) पामो एम इच्छुं छु

तथास्तु

मु॰ कावीठा, महा सुद १ स १९६९

ली॰

मुनि बुद्धिसागर

(प्रथमावृत्ति उपरथी)

द्वितीयावृत्तिनु

निवेदन

जिनेश्वर रचित शास्त्रोनो पार पामर जीवो पामी शके तेम नथी तेमां पण (१) गणितानुयोग (२) चरणकरणानुयोग (३) कथानुयोग अने (४) द्रव्यानुयोग ए चारे विभागमां द्रव्यानुयोगनो सर्वथा प्रकारे पार तो कोइक ज्ञानी विरला पामी शके छे आ विषयमां उंडा उतरवुं अने आत्माने आत्मस्वरूपे ओळखीने कैवल्यज्ञान प्रगटाववुं ए मनुज विकट थाय छे तेमां पण वर्तमान समय तथा प्रकारना ज्ञाननी रूचि थवी ए तो महा पुण्यवंतनु लक्षण जाणवु

द्रव्यानुयोगना अनेक ग्रन्थो छे ते सघळु व्यवसायी मनुष्यो वाचन मनन करी शकता
[illegible] तेओने आ लघु ग्रन्थ वडे 'षड्द्रव्य' नो अभ्यास थाय ते माटे शास्त्रविशारद

गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिश्वरजीए स १९६८ नी सालमा पादरा गामे आ ग्रथ रच्यो हतो, अने पादराना वकील मोहनलाल हेमचदे प्रगट कर्या हतो आ ग्रन्थनी प्रथम आवृत्ति खलास थवाथी अने अभ्यासीओने ते उपयोगी होवाथी फरीथी वकील मोहन लाल हेमचदनी द्रव्य साहाय्यथी मडळने ग्रन्थमाळाना ३६ मा ग्रथ तरीके प्रगट कर वानो शुभ प्रसग मळ्यो छे,

प्रथम आवृत्ति करता केटलेक स्थळे श्री मदे स्वहस्ते सुधारो वधारो कर्यो छे, अने तेमा पण खास करी समकितनु स्वरूप विशे प प्रकारे आलेख्युं छे

आ ग्रथमा द्रव्यना षट् भेद तेना गुणो, तेना पर्याय तेनु स्वरूप, तेना क्षेत्र क्षेत्री, परमाणुओना भेद, वर्गणा आत्मानु नित्य पणु अनित्यपणु उत्पाद व्यय, अने ध्रुव शी वस्तु छे, ज्ञानना प्रकार--भेद--व्यवहारज्ञान अने निश्चयज्ञान, कर्मना प्रकार, तेनो कर्ता

यारथ ग्रन्थमां पण सातनय, प्रमाण, सप्त भंगीनुं स्वरूप ध्याननां प्रकार चार भावना, अने समकितनुं स्वरूप वगेरे बाबतो उपर विवेचन घणीज उत्तम अने सरळ रीते थयुं छे तेमो द्रव्यानुयोगना अभ्यासीओ पोते उपयोग करशे अने बीजाओने ते मार्गे प्रेरशे, पछी आशापूर्वक आ ग्रन्थना प्रगटनार्थे द्रव्यनी सहाय करनार वकील मोहनलाल हेमचंदने धन्यवाद आपी विरमीए छीए.

मुंबाई
चंपागली
जेठ वदि ११

ली०
अध्यात्म ज्ञान प्रसारक
मंडळ.



श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडळ.



स्व० श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळामां प्रगट थयेला ग्रंथोनुं सुचीपत्र.

	प्रथांक	किंमत
*	१ अध्यात्म व्याख्यानमाळा	०-४-०
*	२ भजनसंग्रह भाग २ जो	०-८-०
*	३ भजनसंग्रह भाग ३ जो	०-८-०
*	४ समाधिशतकम्	०-८-०
*	५ अनुभवपचिशी	०-८-०
*	६ आत्मप्रदीप	०-८-०
*	७ भजनसंग्रह भाग ४ थो	०-८-०
	८ परमात्म दर्शन	० १२ ०
	९ परमात्मज्योति	छपाय छे
*	१० तत्त्वबिंदु	०-४ ०
*	११ गुणानुराग (आवृत्ति बीजी)	०-१-०
*	१२-१३ भजनसंग्रह भाग ५ मो तथा ज्ञानदीपिका	०-६-०

* १४ तीर्थयात्रानु विमान (आ बीजी) १-२ ०
* १८ अध्यात्मभजन संग्रह ०-६-०
* १६ गुर्व्वाध (आ बीजी) ०-८-०
१७ तत्त्वज्ञानदीपिका छपाय छे
* १८ गहुंली संग्रह भा १ ०-३-०
* १९-२ श्रावकधर्मस्वरूप भाग १-२ ०-१-०
* २१ भजनपद संग्रह भाग ६ ठो ० १२ ०
* २२ वचनामृत ० १४ ०
२३ योगदीपक ■ १४ ०
२४ जैन अतिहासिक रासमाळा १-०-०
२५ आनंदघनपद (१०८) संग्रह छपाय छे
२६ अध्यात्मशांति (आ बीजी) ०-३-०
* २७ काव्य सं० भाग ७ मो ०-८-०
२८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वा
चीन स्थिति
* २९ कुमारपाळ (हिंदी) छपाय छे
* ३० थी ३४ सुखसागर गुरुगीता ०-६-०
३५ षड्द्रव्य विचार ०-४-०
विजापुर वृत्तांत ०-४-०
०-४-०

× ३७ साबरमती गुणशिक्षण काव्य ०-६-०
* ३८ प्रतिज्ञापालन ०-५-०
* ३९-४०-४१ जैनगच्छमतप्रबंध,
संघप्रगति, जैनगीता १-०-०
४२ जैनधातुप्रतिमा लेख सं भा १ १-०-०
* ४३ मित्र मैत्री ०-८-०
* ४४ शिष्योपनिषद् ०-२-०
४५ जैनोपनिषद् ०-२-०
४६-४७ धार्मिक गद्य सं० तथा
पत्र सदुपदेश भा १ लो ३-०-०
४८ भजन सं० भाग ८ ३-०-०
४९ श्रीमद् देवचंद्र भा १ छपाय छे
× ५० कर्मयोग ३-८-०
* ५१ आत्मतत्त्वदर्शन ०-१० ०
– ५२ भारतसहकारशिक्षण काव्य ० १० ०
५३ श्रीमद् देवचंद्र भा २ छपाय छे
५४ गहूली सं० भाग २ ०-४-०
* ५५ कर्मप्रकृतिटीका भाषांतर ३-०-०
५६ गुरुगीत गहूली सं० ० १२ ०

८२	सत्य स्वरुप	०-६-०
८३	ध्यान विचार	०-८-०
८४	आत्मशक्तिप्रकाश	०-४-०
८५	सांवत्सरिक क्षमापना	०-३-०
८६	आत्मदर्शन (मणीचन्द्रजीकृत सज्झायो) नु विवेचन	०-४-०
८७	जैनधार्मिक शंका समाधान	०-२-०
८८	कन्याविक्रय निषेध	०-६-०
८९	आत्मशिक्षा भावनाप्रकाश	०-७-०
९०	आत्मप्रकाश	१-८-०
९१	शोक विनाशक ग्रन्थ	०-१-०
९२	तत्त्वविचार	०-६-०
९३-९७	अध्यात्मगीता विस्तृत ग्रन्थ	१-०-०
९८	जैनसूत्रमां मूर्तिपूजा	०-३-०
९९	श्री यशोविजयजी निबंध	०-६-०
१००	भजनपद स भाग ११	०-१२ ०
०१	" भा १ आ ४थी	०-८-०
१०२	गुजरात वृहद् विजापुर वृत्तांत	१-४-०
१३०	श्रीमद् देवचन्द्रजी विस्तृत जी	

धनचरित्र तथा देवविलास ० १२ ०
१०५ मुद्रितजैन श्वे० ग्रन्थगाइड १-८-०
१०६ कक्कावली-सुबोध १-४-०
१०७ स्तवन सं० (देववन्दन सहित) ० १० ०
१०८ पत्र सदुपदेश भाग २ ०-६-०
१०९ श्रीबुद्धिसागर सूरीश्वर स्मारक
ग्रन्थ (सचित्र) ० १२ ०

---

* आ निशानीवाळा ग्रन्थो शिलकमां नथी

× आ ग्रन्थो ब्रिटिश केळवणी खाताए मंजुर करेला छे

– आ ग्रन्थो श्रीमंत गायकवाड सरकारना केळवणी खाताए मंजुर करेला छे

ग्रन्थो मळवाना ठेकाणा

१ वकील मोहनलाल हेमचंद-पादरा (गुजरात)
२ शा. आत्माराम खेमचंद-साणंद.
३ शा. नगीनदास रायचंद भांखरीया-
महेसाणा.
४ शा. चदुलाल गोकलभाइ-विजापुर.
५ शा. रतीलाल केशवलाल-प्रांतिज.
६ श्री बुद्धिसागरसूरि जैनसमाज-पेथापुर.
७ शा. मोहनलाल नगीनदास भांखरीया-
१०१-३ बजार गेट, कोट, मुंबाइ
८ श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ—
हेड ओफीस झवेर गुमानजी माळो,
ग्रांट फाटा—मुंबाइ

अशुद्धिशुद्धिपत्रक

पान	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि.
७	४	स	सं
१०	५	नू	न
१४	१०	व्हे	व्य
३१	५	मि	मि
४१	७	उपा	उप
४२	७	मत	मसे
४४	३	जमे	जेम
४/	६-७	आत	आत
५२	५	तेन्	तेने
५४	२	सूत्रमा	सूत्रमा
५४	१५	प्रत्यमा	प्रत्यमा
५५	३	शते	शत
५६	११	अमत	अमत
६५	२	सन	सथ
६६	३५	विमाग	विभाग
७९	१२	सद	सद्
८०	११	स्ले	म्ले
८३	५	शुम	शुम

८०	१३	मू	सू
९६	१३	नास्त	नास्ति
९७	१३	त्रु	लु
९८	८	अयतत्य	अयत्तव्य
११८	७	मदीन	मदीनै
१२२	११	श्र	श्रु
१२३	१३	आनष्सयोग	अनिष्टमयोग
१२४	२	यन्तु	यत्तु
१२८	२	महल्प	महेत्ल
१०९	१६	यान्	यान
१४४	७	श्रीजा	श्रीजो
१५०	१६	योजा	यीजा
१६५	११	द्व	द्द
१७६	१४	आम	अभि
१७७	१२	श्र	श्रु
१८१	५	श्थ	न्य
१८५	१५	"क्र	क्र
१८९	३	ष्या	ध्या
१९३	६	तु	तु
२०२	४	श्य	ध्य
२०३	१४	पार	परि
२०९	८	गा	या
२१८	६	सर्याय	मर्याय

श्री

अनुक्रमणिका

॥ ॐ नमः ॥

षड्द्रव्य विचार.

मङ्गलम्

नमो अरिहताणं. नमो सिद्धाण. नमो आयरियाण नमो उवज्झायाण नमो लोए सव्व साहूण एसो पंच नमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो मगलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मंगलम्

दुहा.

ब्राह्मी भगवती भारती, प्रणमी तेहना पाय,
जिनवाणीना चार भेद, अनुयोगे करी थाय १

पूर्व मणीत ग्रंथोदधि, सम्यक्त्वादिक सार,
तेहनो लेश लही करी, वचन रहु धरी प्यार. ९
पंडितजन सुदृष्टिथी, देखे जो आ ग्रंथ,
सार विचारी धारीने, पामे शिवपुर पंथ. १०
दुर्जन देखी दोषने, मनमा माने हर्ष,
पंडित जन करे पारखु, माने ते उत्कर्ष. ११

आ चतुर्गति रुप ससारमा आत्मा अनादि कालथी परिभ्रमण करे छे, अने कर्मना योगे जन्म जरा मरणादिरूप दुःख भोगवे छे. कर्मना सयोगथी एकेंद्री बेरेंद्री तेरद्री चौरेंद्री अने पचेंद्रीपणु पामे छे. दश दृष्टाते दुर्लभ मनुष्य जन्म पामीने पण श्रावककुल, सद्गुरुसमागम, जिनवाणीनु श्रवण, तेनी सद्दहणा अने ते प्रमाणे वर्तवु ए आदि उत्तरोत्तर दुर्लभ छे.

व्यवहारज्ञान-एटले अलंकार, व्याकरण, अन्य मतियोना ग्रंथ तथा गणितानुयोग, कथानुयोग, चरणकरणानुयोगनुं जाणपणु, ए सर्व व्यवहार ज्ञान छे. तथा उपयोग विना सूत्र सिद्धांतना अर्थ करवा ए पण व्यवहार ज्ञान छे, हठ समाधि ते पण व्यवहार ज्ञान छे. एनाथी मुक्ति मळती नथी, पण आत्माना स्वरूपनु सम्यग् जाणवु, षट् द्रव्यना गुण पर्यायनुं जाणवु, उत्पाद व्यय अने ध्रुवनु जाणवु, ते थकी निश्चय ज्ञान पूर्वक मुक्ति थाय छे. पाच द्रव्य त्याग करवा योग्य छे, एमां आत्मानी वस्तु कइ नथी, ए पाचमां पण पुद्गल द्रव्यना संयोग संबंधे आ आत्मा परन्तु पोतानी मानी बेठो छे. पण वस्तुत. ते पोतानी नथी. ज्ञान वस्तु आत्मानी छे.

अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनन्त चारित्र अने अनंत वीर्यनो भोक्ता, आत्मा अरूपी असंख्य प्रदेशमयी छे. तेनुं जे ज्ञान तेने निश्चय ज्ञान कहे छे

आत्मा वस्तु अनादि अनंत छे, तेने अनादिथी कर्मनो संयोग थयो छे, तेथी दुःखी थाय छे. भव्यी साथे कर्मनो संबंध अनादि सांत माने छे. अभव्यी साथे कर्मनो संबंध अनादि अनंतमें माने छे.

कर्मना आठ प्रकार छे-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अने अंतराय, एम आठ कर्म छे, तेनी उत्तर प्रकृति १५८ छे ते कर्मरूप जड वस्तुनो प्रपंच विचित्र छे. जेम ज्ञानीरूप जड औप-

विना भक्षण थकी बुद्धिनुं स्फुरायमानपणुं थाय छे, तेम कर्म वस्तु जे जडरूपे छे, तेना संबंध थकी आत्मा विचित्र आकारे देखाय छे, अने जुदा जुदा प्रकारना शरीरने धारण करे छे, तेम पांचइन्द्री, मन, वचन अने काय रूपें पुद्गल वस्तुने धारण करे छे, ए सर्व कर्मना प्रपंच छे, ए कर्म पुद्गलास्तिकाय छे. जड छे, सक्रिय छे, तेमा आत्मापणु नथी, एम ज्यारे ज्ञान थाय छे त्यारे तेनाथी मोह उतरे छे षट् द्रव्यनुं ज्ञान थवाथी समकितनी प्राप्ति थाय छे. ते षट् द्रव्य देखाडे छे.

(१) धर्मास्तिकाय (२) अधर्मास्तिकाय (३) आकाशास्तिकाय (४) पुद्गला-

स्तिकाय (५) काळ (६) जीवास्तिकाय ए छ द्रव्य शाश्वता छे.

ए छ द्रव्यना अनुक्रमे गुण कहे छे.

१ धर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरूपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) गतिसहाय

२ अधर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरूपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) स्थितिसहाय

३ आकाशास्तिकायना गुण ४ (१) अरूपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) अवगाहनादान

४ पुद्गलास्तिकायना गुण ४ (१) रूपी (२) अचेतन (३) सक्रिय (४) मिलण विखरण-पूरणगलन.

५ काळद्रव्यना गुण ४ (१) अरूपी

(२) अचेतन (३) अक्रिय (४) नवापुराण वर्तना लक्षण.

६ जीवद्रव्यना गुण ४ (१) अनंतज्ञान (२) अनंतदर्शन (३) अनंतचारित्र (४) अनंतवीर्य.

ए छ द्रव्यना गुण कह्या ते नित्य ध्रुव रूपे छे

छ द्रव्यना अनुक्रमे चार चार पर्याय कहे छे

१ धर्मास्तिकायना (१) खंध (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु

२ अधर्मास्तिकायना (१) खंध (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु.

३ आकाशास्तिकायना(१) खंध (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु.

४ पुद्गल द्रव्यना (१) वर्ण (२) गंध

३ रस (४) स्पर्श (अगुरल-
घु सहित)

५ कालद्रव्यना (१) अतीत(२)अनागत
(३) वर्तमान् (४) अगुरु लघु.

६ जीवद्रव्यना (१) अव्याबाध(२) अनवगाह
(३) अमूर्तिक (४) अगुरुलघु

ए ६ द्रव्यना पर्याय कह्या

हवे ए ६ द्रव्यना गुणपर्यायनुं सा[illegible]
स्पर्शे छे.

अगुरुलघु पर्याय छए द्रव्यमा सरखं
छे. अरुपी गुणे करी पांच द्रव्यनु साधर्म्य छे
एक पुद्गल द्रव्यमा अरुपी गुण नथी का
रण ए पुद्गलद्रव्य रुपी छे. तथा अचेतन गु
ए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अ

काश, पुद्गल अने काल ए पांच द्रव्यनुं सा-
धर्म्यपणुं छे जीवद्रव्यमां अचेतन गुण नथी.
'चेतनालक्षणोजीवः इति वचनात्' सक्रियगुणे
करी जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्यनुं व्यव-
हारथी साधर्म्य छे कर्म थकी रहित-सिद्ध
जीवोमां सक्रिय गुण नथी, बाकीनां चार
द्रव्यमां सक्रिय गुण नथी. गति सहाय गुण
एक धर्मास्तिकायमां छे बाकीनां पांच द्रव्य
मां नथी. स्थिति सहाय गुण एक अधर्मा-
स्तिकायमां छे, बीजां पांच द्रव्यमां नथी.
तथा अवगाहना गुण ते एक आकाशास्ति-
काय द्रव्यमां छे, बाकीनां पांच द्रव्यमां नथी.
वर्तना गुण एक काल द्रव्यमां छे, बीजां
पांच द्रव्यमां नथी मिलण विखरण गुण पु-
द्गल द्रव्यमां छे, बाकीनां पांच द्रव्यमां नथी

तथा ज्ञान गुण ते एक जीवद्रव्यमा छे
बाकीना पांच द्रव्यमा नथी ए मूळ गु
कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमा मळता नथी.

एक धर्मास्तिकाय, बीजुं अधर्मास्ति
काय, त्रीजुं आकाश, ए त्रण द्रव्यना
गुण तथा चारपर्याय सरखा छे, अने अरू
अचेतन, अक्रिय ए त्रण गुण करी काल
न्य पण ए समान छे.

हवे ए छ द्रव्यना गुणपर्याय स्व
जाणवाने सूत्रपाठ–गाथा कहे छे

[1]परिणामि [2]जीव [3]मुत्ता, [4]सपए
[5]एग [6]खित्त [7]किरिआय ॥ [8]णिच्चं का
[10]कत्ता, [11]सव्वगय [12]इयर [13]अप्पवेसे

अर्थ. निश्चयनये छए द्रव्य परिणामी छे कारण के धर्मास्तिकाय पोतानामां निश्चयनये परिणमी रह्यु छे, पण बीजा पाच द्रव्यमा परिणमतु नथी. बीजुं अधर्मास्तिकाय द्रव्य पण निश्चयनये पोताना स्वरूपमा परिणमी रह्यु छे, पण बीजा पाच द्रव्यमा परिणमतु नथी. आकाशास्तिकाय पण निश्चयनये पोताना स्वरूपमाज परिणमे छे. काळ द्रव्य पण निश्चय नये पोताना स्वरूपमां परिणमी रह्यु छ, पण बीजा पाच द्रव्यमा निश्चयनये परिणमतु नथी. जो निश्चयनये जीव पुद्गल द्रव्यमा परिणमे तो कोइकाले कर्म थकी रहित थइ सिद्धिपद पामे नही. व्यवहारनये जीव नारकीयानी पेठे एकेंद्री, बेंद्री, तेरेंद्री, चौरेंद्री, देवता, मनुष्य, तिर्यंच

स्तिकाय अने काळ, ए पांच द्रव्य अजीव छे. कारण के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप वीर्य अने उपयोगरूप जीवनुं लक्षण तेमनामां नथी. जीव द्रव्य ते जीव छे. ' चेतनालक्षणो जीव इतिवचनात् '

छए द्रव्यमां पुद्गल द्रव्य मूर्तिमंत छे, अने शेष पांच द्रव्य अमूर्त छे. धर्म, अधर्म आकाश, अने काळ ए चार द्रव्य अमूर्त छे. जीवद्रव्यना बे भेद छे. सिद्ध अने संसारी. तेमां सिद्धना जीव अमुर्तिमंत छे अने संसारी जीवो कर्मोपाधिथी मूर्तिमंत छे. निश्चयनये जीव अरूपी छे माटे अमूर्त्ति कहेवाय छे, अने व्यवहारनये करी देवता, मनुष्य, तीर्यंच अने

भेद थाय छे, ते सर्व मूर्तिरूप जाणवा. व्यवहार नयथी पुद्गल द्रव्यना अनता परमाणुओ मळी खंध बने छे, त्यारे नजरे दीठामा आवे छे, माटे एने मूर्त कहेवाय छे. ए छ द्रव्यना स्वरूपमा मूर्त अमूर्तनो विचार कह्यो.

हवे सप्रदेशी अने अप्रदेशीनो विचार कहे छे.

छ द्रव्यमा पांच द्रव्य सप्रदेशी छे अने एक काळद्रव्य अप्रदेशी छे, धर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशमय छे, अधर्मास्तिकाय असंख्य प्रदेशमय छे, आकाश द्रव्य अनत प्रदेशी छे. जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे जीव द्रव्य अनता जाणवा. तथा पुद्गल परमाणुओ (उपचारथी) अनत प्रदेशी छे,

अने एकेक परमाणुआमा अनता पर्याय रह्या छे परमाणुआ अनत छे ए रीते पाच द्रव्य सप्रदेशी छे अने काळद्रव्य अप्रदेशी छे, एनो गणित काळ सो उत्पाद व्ययरूप परुरूण स्वभावे अढी द्वीप प्रमाण जाणवो ए रीते षड् द्रव्यमा सप्रदेशी अने अप्रदेशीनो विचार कह्यो.

हवे षड्द्रव्यमा एक अनेकनो विचार कहे छे

षड् द्रव्यमा त्रण द्रव्य एक अने त्रण द्रव्य अनेक जाणवा कारण के धर्मास्तिकाय द्रव्य असख्यात प्रदेशी, लोकव्यापी एक जाणवु, तेमज अधर्मास्तिकाय द्रव्य असख्यात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवु तेमज आकाशास्तिकाय द्रव्य पण अनत प्रदेशी ... एक जाणवु, एम ए त्रण द्रव्य कहीए, अने जीव द्रव्य लोक

व्यापी अनंता जाणवा, ते एकेक जीवना अ-
सख्याता प्रदेश छे, अने एकेक प्रदेशे अन-
ती कर्मनी वर्गणाना थोकडा लाग्या छे.
तथा जीव थकी रहीत घट—पट—दड प्रमुख
बीजा पुद्‌गलना छुटा स्कंध पण अन
ता छे, माटे जीव थकी पुद्‌गल द्रव्य अनंत-
गुणा जाणवा, अने एकेकी कर्म वर्गणामां
अनंत पुद्‌गल परमाणुआ रह्या छे, ते परमा
णुआ द्रव्य थकी सदाकाल शाश्वता छे, माटे
एकेक परमाणुआमां अनंता उत्पाद व्ययरुप
कालना समय अतीतकाले व्यतीत थइ
गया, तथा हजी पण अनंता समय आवने
काले व्यतीत थशे, अने परमाणुआ तो तेना
तेज सदाकाळ शाश्वता छे. माटे पुद्‌गल द्रव्य
थकी पण काळद्रव्यना समय अनंता जाणवा.

ए रीते जीव पुद्गल अने काल ए त्रण अ
नेक कहीए

ए रीत एक अनेकना विचार षड्द्रव्य
मां कह्यो.

षड्द्रव्यमां क्षेत्र अने क्षेत्रीनो विचार दर्शावे छे

छ द्रव्यमां आकाश द्रव्य क्षेत्र छे अने
बाकीना धर्म, अधर्म, काल, पुद्गल, अने
आत्मा, ए पांच द्रव्य आकाश क्षेत्रमां रहे
छे माटे क्षेत्री जाणवा, ते केवी रीते रह्या
छे ते बतावे छे आकाशनी पाधणनो एक भाग
ग्रहण करीने तेना खंड [भाग] एवा करी-
ए के एक खंडना बे खंड न थाय, एवा सूक्ष्म
॰ प्रमाणे आकाश क्षेत्र लइए, तेटला
आकाशना असंख्याता प्रदेश रह्या छे, अने

तेटलामा धर्मास्तिकायना असंख्यात प्रदेश छे, तथा अधर्मास्तिकायना पण असंख्यात प्रदेश छे अने निगोदीया गोळा पण असंख्याता रह्या छे ते सर्व पच्या मुकीने ते माहेलो एक गोळो लइए ते एक गोळामा असंख्याती निगोद रही छे ते असंख्याती निगोद पडती मुकीने ते माहेथी एक लइए, ते एक निगोदमां पण अनंता जीव रह्या छे, ते जीवनी गणती बतावे छे, एक अतीतकाल छेडा रहीत अनंतो गयो, तथा अनागत काल ते पण छेडा रहीत छे, ते सर्वेना जेटला समय थाय, तेनी साथे वर्तमान कालनो एक समय पण गणवो एटले अतीत अनागत अने वर्तमानकालना जेटला समय थाय, ते सर्वने अनंतगुणा करीए एटला जीव एक निगोदमा रह्या छे, ते सर्व

जीव पन्या सुर्शने ते माहेथी मात्र एक जी
स्‍इए, ते एक जीवना असङ्ख्याता प्रदेश छे,
मध्ये एकेका प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणा
लागी छे, ते सर्व वर्गणाओ पहती मुकीने
माहेथी एक वर्गणा ल्‍इए, ते एक वर्गणा
अनंता पुद्गल परमाणुआ रह्या छे
बतावे छे

प्रथम परमाणुआना बे भेद छे, एक
परमाणु अने बीजा खधना, वली स्कधन
भेद छे, एक जीव सहीत खध, अने बीजा
रहीत खध, ते घण्ट दई प्रमुख अजीव
जाणवा त्या प्रथम जीव सहित खधनो वि
करीए छीए.

बे परमाणुआ भेगा थाय ते वार
, खध कहेवाय छे, त्रण परमाणुअ

ळा थाय, तेवारे त्र्यणुक खंध कहेवाय छे, एम असंख्याता परमाणुआ भेळा थाय त्यारे असंख्याताणुक खंध कहेवाय छे, एटला परमाणुआना खंध थाय त्यां सुधीना खंध ते तो जीवने ग्रहण करवा योग्य थता नथी एटला परमाणुआना खंधने कोइ जीव ग्रहण करी शकतो नथी, परंतु अभव्य राशिना जीव चुम्मोत्तरये बोले छे, ते थकी अनंत गुणाधिक परमाणुआ ज्यारे भेळा थाय ते वारे औदारिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे, ते औदारिकनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दलीया जेवारे भेळा थाय ते वारे वैक्रिय शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे, वैक्रियनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक

जीव चारगतिमां जन्म मरणे देवता, मनु
ष्य, तिर्यंच, अने नारकीरुप नवा नवा भव
धारण करे छे, माटे अनित्य कहीए. तथा
व्यवहारनये पुद्गल द्रव्यना खंध पण स
अनित्य जाणवा, कारण के पुद्गल द्रव्यना
खंध बने छे. अने पाछा विखरे छे, माटे
अनित्य जाणवा. द्रव्यास्तिकायना मते जीव
असंख्यात प्रदेशी नित्य सदाकाळ शाश्वत
छे, अने अशुद्ध अनित्य पर्याये जीव अशा
श्वतो जाणवो कारण के अशुद्ध अनित्य प
र्याये जीव चार गतिरुप संसारमां उत्पा
द्व्ययरुप पल्टण स्वभावे वर्ते छे. ते आवी
रीति-मनुष्य भवना पर्यायनो व्यय थयो अ
देवताना भवना पर्यायनो उत्पाद थयो. वळी
तिर्यंच भवना पर्यायनो व्यय थयो, अने म

तुल्य भवना पर्यायनो उत्पाद थयो. एम जीव अशुद्ध अनित्य पर्याये उत्पाद व्ययरुप पक्षण स्वभावे चार गतिरुप संसारमा सदाकाल वर्ते छे, अने जीव एनो ए ध्रुवपणे शाश्वतो छे, तथा जीवना जन्म मरण थाय छे ते सर्व उत्पाद व्यये थाय छे, माटे द्रव्यास्तिकनये जीवने नित्य समजवो, अने पर्यायास्तिक नये करी जीवने अनित्य समजवो. ए रीते षट् द्रव्यमा निश्चय व्यवहारे नित्यानित्यपणु जाणवु.

षट् द्रव्यमा जीवद्रव्यने पांच द्रव्य कारण रुप जाणवा, अने जीव द्रव्य अकारण जाणवुं. जेमके जीवकर्त्ता अने तेने धर्मास्तिकाय कारण मळ्यु, तेवारे जीवने चालवा हालवा रुप कार्य थयुं. तेमज जीवकर्त्ता अने

तेने अधर्मास्तिकाय रुप कारण मळ्युं, ते वारे जीवने स्थिर रहेवा रुप कार्य नीपज्युं तेमज जीवकर्त्ता अने तेने आकाशास्तिकाय कारण मळ्युं तेवारे जीवने अवगाहना रुप कार्य थयुं तेमज जीवकर्त्ता अने तेने पुद् गलास्तिकाय रुप कारण मळ्युं तेवारे जी वने समय समय अनंता कर्म स्कंधो लेवा खेरववा रुप कार्य नीपज्युं तेमज जीव द्र व्यकर्त्ता अने तेने काल द्रव्य कारण मळ्युं. तेवारे नवा पुराणा वर्त्तनारुप कार्य नीपज्युं. ए रीते षट द्रव्यमां जीवने पांचे द्रव्य कार ण पणे जाणवा, अने जीव पोते अकारण छे

घणी मतियोमां संक्षेपे एटलुं छे के। द्रव्यमां एक जीव द्रव्य कारण छे, बाकीना धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति

काय, पुद्गलास्तिकाय, काल, ए पाच द्रव्य अकारण छे, ए वात पण घणी रीते मळती छे माटे बहुश्रुत कहे ते खरं, आगम सार ग्रंथकर्त्तानी ध्यानमां तो एम आवे छे के जीव द्रव्य कारण, अने पाच द्रव्य, अकारण एम संभवे छे.

निश्चयनये छ ए द्रव्य पोते पोताना स्वरूपनां कर्त्ता छे, अने व्यवहार नये अनेक नयनी अपेक्षाए जोता तो एक जीव द्रव्य कर्त्ता अने पाच द्रव्य अकर्ता जाणवा. ते आवी रीते व्यवहार नयना ■ भेद छे, त्यां प्रथम शुद्ध व्यवहारनयने जीव शुद्ध निर्मल, कर्म थकी रहित एवु पोतानु स्वरुप नीपजाववु तेनो कर्त्ता जाणवो. एटले जे जे (चालु) गुणठाणानु छोडवुं, अने उपरना

गुणठाणानुं छेउ, तेने शुद्धव्यवहारनये कर्त्ता कहीये. पहेले गुणठाणे अनतानुबंधिनी चोकडी हती ते खपावी अने चोथे गुणठाणे आव्यो त्यारे जीवने एक समकित गुण प्रकाशित थयो, अने अप्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी त्यारे पांचमुं गुणठाणु प्राप्त करी देशविरति गुण प्राप्त थयो तथा प्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी तेवारे छठ्ठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति गुण पाम्यो. अगीआरमे बारमे गुणठाणे पहोंची रागद्वेष रूप मोहनीय कर्म खपावी बारमे गुणठाणे घातीकर्मनो क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्यो ए रीते पूर्वना गुणठाणानु ~ ०धु, अने उपरना गुणठाणानु ग्रहण +र्‍धु तेने शुद्ध व्यवहार नय जाणवो

जीव कर्मरुप अशुद्धताने टाळे, अने गुण रुप शुद्धताने नीपजावे, ते जीवमा शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

हवे बीजा अशुद्ध व्यवहारनये जीवमा अज्ञान रागद्वेष, अनादिकाळना शत्रु थइ लाग्या छे, तेथी जीवमा अशुद्धपणु जाणवुं. ए अशुद्धताए जीवने समय समय अनंतां कर्मरुप दळीआ सचाए लागे छे. ए अनादिकालनी अशुद्धता जाणवी ए अशुद्ध व्यवहारनये जीवकर्त्ता छे तेनुं स्वरुप जाणवु. हवे त्रीजा शुभ व्यवहार नये जीव दान, शील, तप, भाव, पुजा, प्रभावना, सेवा भक्ति साधर्म्यवात्सल्य, विनय, वैयावृत्य, उपकार, करुणा, दया, यत्ना, मीठुं मनोहर वचन बोलवु, अने सर्व जीवनुं रुडुं चितववु

ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने शुभ क-
रणी जाणवी. ए शुभ व्यवहारनये जीव
कर्त्ता कहीये. चोथा अशुभ व्यवहार नये
जीव क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, क-
षाय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दु
गछा, निद्रा, चाडि, ममता, हिंसा, मृषा,
अदत्त, मैथुन, अने परिग्रह, ए आदि अनेक
प्रकारनी जीवने अशुभ करणी जाणवी
ए अशुभ व्यवहारनये जीवकर्त्ता जाणवो.

हवे पाचमा उपचरित व्यवहारनये घर
कुटुंब, परिवार, हाट, वखार, गाम, गरास
देश, चाकर, दास, दासी, वाणोतर, राज्य
ाडी, वन, आराम, कुवा अने सरोवर,
ादि अनेक प्रकारनी वस्तु वे पोताना
प्रत्यक्षपणे जुदी छे, तेने जीव अज्ञानप

पोतानी करी जाणे छे, तेने मारुं मारुं करतो फरे छे, तेनी वृद्धि देखी खुशी थाय छे, तेनो नाश देखी रडे छे, कुटे छे, शोक करे छे, अने तेने माटे पोताना प्राणनो पण नाश करे छे, तेने पोतानु मानी तेनो कर्त्तामानी जीव पापनो अधिकारी पोते थाय छे, ए रीते उपाचरित व्यवहारनये जीवने कर्त्ता जाणवो.

हवे छट्ठा अनुपचरित व्यवहारनये जीव शरीर आदि परवस्तु, जे पोताना स्वरूपथी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, पण परिणामिक भावे लोलीभूतपणे एकठी मळी रही छे, तेने जीव पोतानी करी जाणे छे. एवा शरीरने जीव अनंतिवार पाम्यो, अने अनंतिवार ते शरीरनो त्याग कर्यो, तोपण अज्ञानपणे जीव तेने पोतानुं करी जाणे छे, तेने वास्ते अ-

नेक प्रकारनी हिंसा करे छे, असत्य वचन बोले छे, अदत्त ग्रहण करे छे, पण अने ते वस्तु पोतानी थती नथी पण पाप करी जीव भारे थाय छे, ए रीते अनुपचरित व्यवहारनये जीवकर्त्ता जाणवो. ए रीते ▯ प्रकारे व्यवहारनयने मत जीवने कर्त्तापणु देखाड्यु.

सव्वगयइयर-कहेता सर्वगत एटले सर्वव्यापी द्रव्य केटला, अने इयर कहेता देशव्यापी द्रव्य, छ द्रव्यमा केटला पामीए ते कहे छे.

षड्द्रव्यमा एक आकाशद्रव्य, सर्व लोकालोकव्यापी छे, अने पांच द्रव्य-देश व्यापी जाणवा, धर्मास्तिकाय असंख्यात ` ` लोक व्यापी जाणवु. अधर्मास्ति-

काय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी जाणवु. तथा कालद्रव्य गणितकाल ते अढी-द्वीपव्यापी जाणवु, तथा जीवद्रव्य पण लोकव्यापी जाणवु. तथा पुद्गलद्रव्य पण लोकव्यापी जाणवु. एकेक जीवने सत्ताए अनंता कर्मरूप पुद्गल परमाणुआ-स्कंध लाग्या छे. तथा ते थकी बीजा छुटा लोकव्यापी पुद्गल परमाणुआ-स्कंध पण अनंता छे, ते सर्वे लोकव्यापी छे. ए रीतेण पाच द्रव्य देशव्यापी जाणवां अने एक आकाशास्तिकाय द्रव्य, अनंत प्रदेशी, सर्वव्यापी जाणवु. ए रीते छ द्रव्यमा सर्वव्यापी तथा देशव्यापीनुं स्वरूप जाणवु.

छ ए द्रव्य अप्पवेसा-अप्रवेशी एटले कोइ द्रव्य बीजा द्रव्यमां प्रवेश करी भळी

जता नथी, अने एक बीजानु कोइनोइनु काम पण करता नथी, जेम कोइ दुकान उपर पाच वाणोतर रहेता होय ते सर्व पोतपोतानु कार्य फरमाव्या मुजब कर्या करे, अने सहु सहुनी मर्यादामा चाले, तेम लोकमा छ द्रव्य भेग्गा थया छे. छ द्रव्य पोतपोतानी मर्यादामा वर्ते छे, पण निश्चयनये कोइ पण बीजामा माहोमाहे भळता नथी, माटे अप्रवेशी जाणवा. ए रीते षड द्रव्यनु स्वरूप चार भागे भव्य जीवोए जाणवु.

हवे एकेका द्रव्यमा आठ पक्ष कहे छे.

आठ पक्षना नाम-एक नित्य, बीजो अनित्य, त्रीजो एक, चोथो अनेक, पांचमो सत्, छठो असत्, सातमो वक्तव्य, आठमो अवक्तव्य.

धर्मास्तिकायना चार गुण नित्य छे. तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो एक खंध नित्य छे. बाकीना देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. अधर्मास्तिकायना चार गुण, तथा एक लोकप्रमाण खंध नित्य छे अने बाकीना त्रण पर्याय अनित्य छे. आकाशास्तिकायना चार गुण, तथा लोकालोक प्रमाण खंध नित्य छे, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. कालद्रव्यना चार गुण नित्य छे, अने चार पर्याय अनित्य छे. पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य छे, अने चार पर्याय अनित्य छे. जीव द्रव्यना चार गुण, अने त्रण पर्याय नित्य छे, अने एक अगुरु लघु पर्याय, अनित्य छे. ए रीते नित्यानित्य पक्ष कह्यो.

हवे षट् द्रव्यमां एक अनेक प
बतावे छे

एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय
ए बे द्रव्यना स्कंध लोकाकाश प्रमाण एक
छे अने गुण अनंता छे. आकाश द्रव्यनो
लोकाकाश प्रमाण स्कंध एक छे, अने गुण
अनंता छे, पर्याय अनंता छे, प्रदेश अनंता
छे, माटे अनेक छे काल द्रव्यनो वर्तनाल
गुण एक छे, अने बीजा गुण अनंता छे,
पर्याय अनंता छे, समय अनंता छे. केमके
अतीतकाले अनंता समय गया, अने अनागत
काले अनंता समय आवशे, तथा वर्तमानकाले
समय एक छे माटे अनेक पण छे.
पुद्गल द्रव्यना परमाणुआ अनंता छे,
एक एक परमाणुमां अनंता गुणपर्याय छे.

ने अनेकरूपणु छे, अने सर्व परमाणुमा पुद्गलपणुं ते एकज छे. जीव द्रव्य अनता छे, एकेका जीवमा प्रदेश असंख्याता छे, तथा गुण अनता छे. पर्याय अनंता छे ते अनेकरूपणु छ, पण जीवितव्य सर्व जीवोमा एक सरखुं छे, माटे एकपणु छे.

इहा शिष्य पुछे छे के–सर्व जीव एक सरखा छे तो मोक्षना जीव सिद्ध परमानद मयी देखाय छे, अने ससारी जीव कर्मवश पडया दुःखी देखाय छे, तेनु केम ? तेने उत्तर आपे छे के–निश्चयनये तो सर्व जीव सिद्ध समान छे, माटेज सर्व जीव कर्म खपावी सिद्ध थाय छे, तेथी सर्व जीवनी सत्ता एक छे, वली शिष्य पुछे छे के जो सर्व जीव सिद्ध समान कहो छो तो अभव्य जीव पण

सिद्ध समान छे एम थयुं, अने तेतो मोक्ष
जाता नथी, तेनुं केम ? तेने उत्तर आपे छे
के अभव्य ने कर्म चीकणा छे, अने अभ
व्यपा, परावर्त धर्म नथी, तेथी सिद्ध थता
नथी. अभव्यने कर्मनो संबंध अनादि अ
नतमे भागे छे, तेथी कोड काले ते मोक्ष
जशे नहीं. भव्य जीवमा परावर्त धर्म छे
माटे कारण सामग्री मलयाथी पलटण पामे
छे, अने गुणश्रेणि चढीने सिद्ध थाय छे.
आत्माना आठ रुचक प्रदेश, निश्चय नयथी
भव्य तथा अभव्य सर्व जीवोना सिद्ध स
मान छे, माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सर
खी छे. ए आठ रुचक प्रदेशने कर्म नील
कुल लागतां नथी, ते आचारांगसूत्रनी थी
. . . हुत टीकाना लोकविजय अ

ध्ययनमां प्रथमोद्देशके कह्यु छे.

हवे सत् तथा असत् पक्ष कहे छे. ए छ द्रव्य स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वभावपणे सत् एटले छता छे, अने परद्रव्य परक्षेत्र, परकाल, अने परभावपणे असत् एटले अछता छे. तेनी रीत बतावावाने माटे ए षड् द्रव्यनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भाव, कहीये छीए.

दव्वगुणसमुदाउ
खित्तओगाहवट्टणाकालो
गुणपज्जाय पवत्ति
भावोनिअवथ्थुधम्मोसो ॥१॥

धर्मास्तिकायनो मूल गुण चलण सहाय पणो ते स्वद्रव्य,

स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. आ
काशास्तिकायनो मूळ गुण अवगाहपणो ते
स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूळ गुण वर्तना लक्ष
णपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. तथा पुद्गल द्रव्य
नो मूलगुण पूरण गलनपणो ते स्वद्रव्य जा
णवो. जीव द्रव्यनो मूळ गुण ज्ञानादिकचे
तना लक्षणपणो ते स्वद्रव्य, ए छ द्रव्यनो
स्वद्रव्यपणो कह्यो.

हवे षड द्रव्यनो स्वक्षेत्र कहे छे-धर्मा-
स्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनो स्वक्षेत्र अस-
ख्यात प्रदेशमय जाणवो आकाश द्रव्यनो
स्वक्षेत्र अनत प्रदेशमय जाणवो. काल द्र-
व्यनो स्वक्षेत्र समयरूप छे पुद्गल द्रव्यनो
एक परमाणु छे. परमाणुआ अनता
जीव द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना अस-

ख्याता प्रदेश छे.

हवे स्वकाळ ते षड्द्रव्यमां अगुरु लघुनो छे. छए द्रव्यना पोत पोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो. साराशके धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा अधर्मास्तिकायमां पण पोतानाज द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. आकाशास्तिकायमां आकाशना ज द्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा काल द्रव्यमां कालना द्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. पुद्गल द्रव्यना द्रव्यादि चार पुद्गल द्रव्यमां छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी तथा जीव द्रव्यना द्रव्यादिक चार ते जीव द्र-

-धर्मा छे, पण त्रीजा पाच द्रव्यना नथी.
"गुणपर्यायवद्द्रव्यम्-" द्रव्यथी अभेदपणे गुणपर्याय होय तेने द्रव्य कहे छे तथा स्वधर्मनो आधारवतपणो तेन क्षेत्र कहे छे, अने उत्पात व्ययनी वर्तना तेने काल कहे छे, तथा विशेष गुण परिणति, स्वभाव परिणति, पर्याय प्रमुख ते स्वभाव कहीए

अत्र एक-भेद स्वभाव, बीजो-अभेद स्वभाव, त्रीजो-भव्य स्वभाव चोथो-अभव्य स्वभाव अने पाचमो-परम स्वभाव, ए पाच स्वभाव जाणवा. तेमा द्रव्यना सर्व धर्मने पोतपोताना स्व स्व कार्य करवेकरी भेद स्वभाव छे, अने अवस्थानपणे अभेद स्वभाव छे. अपरावर्तन स्वभावे अभव्य स्वभाव छे, तथा पलटण स्वभावे भव्य स्वभाव

छे द्रव्यना सर्व धर्म ते विशेष धर्मने अनुयायीज परिणमे, ते माटे ते परम स्वभाव कहीए. ए सामान्य स्वभाव जाणवा. ए रीते छए द्रव्य स्वगुणे सत् छे अने परगुणे असत् छे.

-हवे छए द्रव्यमां वक्तव्य तथा अवक्तव्य पण कहे छे.

ए छ द्रव्यमा अनंता गुण पर्याय ते वक्तव्य एटले वचने कहेवा योग्य छे, अने अनंता गुणपर्याय ते अवक्तव्य एटले वचने करी कही शकाय नही एवा छे. केवळ ज्ञानी महाराजे ज्ञाने समस्त भाव दीठा तेना अनंतमे भागे जे वक्तव्य एटले कहेवा योग्य हता ते कह्या. वळी तेनो पण अनंतमो

प्रमा गुण्या तेना धर्मास्थामा भांगे दाख
आगम रखा छे. ए ॥ द्रव्यमां आठ पक्ष प्रमा

हवे नित्य तथा अनित्य पक्षनी चतुर्भंगी
उपनी ते बनाय छे. जेनी आदि नथी अने
अंत नथी ते अनादि अनंत पहेलो भांगो
जाणवो तथा जेनी आदि नथी पण अंत
छे, ते अनादि सांत बीजो भांगो जाणवो.
तथा जेनी आदि पण छे अने अंत पण छे
ते सादी सांत त्रीजो भांगो जाणवो. वळी
जेनी आदि छे, पण अंत नथी, ते सादि अनंत
नामे चोथो भांगो जाणवो.

हवे ए चार भांगा द्रव्योमा पेरी रीते
उतरे छे, ते बतावे छे

जीव द्रव्यमां ज्ञानादिक गुण ते अनादि
अनंत छे. नित्य छे. भव्य जीवने कर्म साथे

र्शन अनादि छे. पण सिद्ध थाय त्ये त्यारे
अंते आवे छे, तेथी ए अनादि सांत बीजो
भांगो जाणवो. देवता, मनुष्य तिर्यंच अने
नारकी प्रमुखना भव करता, ते सादि सांत
भांगो छे जे जीव कर्म खपावी मोक्षे गया
तेनी मोक्षपणे आदि छे, अने पाछुं संसारमां
कोइ वखत आववु नथी माटे अंत नथी,
तेथी ते आश्रयी सादि अनंत भांगो छे. अभ-
व्य जीव माहे कर्मनो संबंध अनादि अनंत
छे जीव द्रव्यना चार गुण अनादि अनंत
छे. जीवने कर्म साथे संयोग ते अनादि सांत
छे, पण अभव्यने नहीं अभव्यने कर्म संयोग
अनादि अनंत छे.

धर्मास्तिकायमां चार गुण अने पांचमो

भांगो नथी देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु ते सादि सांत भांगे छे तथा सिद्धना जीवो, धर्मास्तिकायना जे प्रदेशे रह्या छे, ते प्रदेश आश्रीने सादि अनंत भांगो छे. एवीज रीते अधर्मास्तिकायमां पण चोभंगी जाणवी.

आकाश द्रव्यमां गुण तथा खंध अनादि अनंत छे बीजो भांगो नथी. तेना देश, प्रदेश तथा अगुरु लघु, सादि सांत छे. तथा सिद्धना जीवनी साथे जे संयोग ते सादि अनंतमा भांगे छे. पुद्गल द्रव्यना गुण, अनादि अनंत छे जीव पुद्गलनो संयोग अभव्यने अनादि अनंत छे, अने भव्य जीवने अनादि सांत छे, पुद्गलना खंध सर्व सादि सांत छे जे खंध रचाया ते स्थिति प्रमाणे रही खरे छे, फरी नवा बंधाय छे सादि

अनंत भागो पुद्गल द्रव्यमा नथी.

काल द्रव्यमा अनादि अनंतमा भांगे चार गुणो छे. पर्यायमा अतीत काल अनादि सात छे. अने वर्तमानकाल सादि सात छे. तथा अनागत कालसादि अनत छे. ए कालनु स्वरुप सर्व उपचारथी छे, ए रीते काल द्रव्यमा चौभंगी जाणवी.

हवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भावमां चौभगी कहे छे.

जीव द्रव्यमा स्वद्रव्यथी ज्ञानादिक गुण छे ते अनादि अनत छे,

स्वक्षेत्रे जीवना प्रदेश असंख्याता छे. ते सादि सांत छे. तदुद्वर्तनापणे फरे छे, ए हेतु थी, अथवा अवगाहना माटे सादि सात छे, पण

छे. वर्तमान काल सादि सांत छे. अनागत काल सादि अनंत छे.

पुद्गल द्रव्यमां सद्भाव जे पूरण गलनधर्म छे ते अनादि अनंत छे अने स्कंध परमाणु ते सादि सांत छे. स्कंधमां अगुरु लघु ते अनादि अनंत छे. अगुरु लघुनो उपजवो विणसवो ते सादि सांत छे. स्वभाव ते गुण चार, अनादि अनंत छे. वर्णादि पर्याय चार, वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श ते सादि सांत छे ए द्रव्यादि चारनी पुद्गल द्रव्यमां चौभंगी जाणवी

हवे छ द्रव्यना संबंध आश्रयीने चौभंगी देखाडे छे.

तेमां प्रथम आकाश द्रव्य छे. तेमां अलोकाकाशमां पांच द्रव्यमांनुं कोइ पण द्र

पुद्गल साथे मळेला सक्रिय छे, अने पुद्गल द्रव्यथी रहित थाय त्यारे अक्रिय छे पुद्गल द्रव्य सदा सक्रिय छे.

हवे एक अनेक पक्षथी निश्चय ज्ञान कहेवाने नय कहे छे. सर्व द्रव्यमां अनेक स्वभाव छे, ते एक वचनथी कह्या जाय नहीं माटे मांहोमाहे नयवडे संक्षेपपणे कहे छे.

द्रव्यनो अनादि अनत संबंध जाणवो. आकाश प्रदेशनी साथे पुद्गल परमाणुनो सादि सांत संबंध जाणवो. एम आकाश द्रव्यनी पेठे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्यनो पण संबंध जाणवो. निश्चयनये ए द्रव्य स्वस्वभावे परिणमी रह्या छे ते परिणामीपणो सदा शाश्वतो छे ते माटे अनादि अनत छे.

जीव द्रव्य तथा पुद्गल द्रव्य बंने मळी संबंधपणाने पामे छे अने तेथी तेने परपरिणामीपणो छे. ते परपरिणामीपणु अभव्य जीवने अनादि अनत छे, अने भव्य जीवने अनादि सांत छे. पुद्गलनो परिणामीपणो ते प्रवाहे अनादि अनत छे अने पुद्गलनु मळवु विखरवु ते सादि सांत भागे जाणवुं. जीव द्रव्य

पुद्गल साथे मळेला सक्रिय छे, अने पुद्गल द्रव्यथी रहित थाय त्यारे अक्रिय छे पुद्गल द्रव्य सदा सक्रिय छे.

हवे एक अनेक पक्षथी निश्चय ज्ञान कहेवाने नय कहे छे. सर्व द्रव्यमां अनेक स्वभाव छे, ते एक वचनथी कह्या जाय नहीं माटे मांहोमाहे नयरहे संक्षेपपणे कहे छे.

मूळ नयना बे भेद छे. एक द्रव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक. तेमा उत्पाद व्यय पर्यायने गौणपणे अने प्रधानपणे द्रव्यनी गुण सत्ताने ग्रहे तेने द्रव्यार्थिक नय कहे छे तेना दश भेद छे

१ सर्व द्रव्य नित्य छे ते नित्य द्रव्यार्थिक.

२ अगुरु लघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न करे अने मूळ गुणने पिंडपणे ग्रहे ते एक द्रव्यार्थिक

३ ज्ञानादिक गुणे सर्व जीव एक सरखा छे, माटे सर्व जीवोने एक कहे अने स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत्द्रव्यार्थिक जेम सद् लक्षण द्रव्यम् .

४ द्रव्यमां कहेवा योग्य गुण अंगीकार करे ते द्रव्यार्थिक जाणवो.

५ आत्माने अज्ञानी कही बोलावो ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय जाणवो.

६ सर्व द्रव्य गुण पर्याय सहित छे एम कहेवु ते अन्वय द्रव्यार्थिक.

७ सर्व जीवनी मूळ सत्ता एक छे ते परम द्रव्यार्थिक जाणवो

८ सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निर्मल छे ते शुद्ध द्रव्यार्थिक नय जाणवो.

९ सर्व जीवना असख्याता प्रदेश एक सरखा छे ते सत्ताद्रव्यार्थिकनय जाणवो.

१० गुण गुणी एक छे ते परमभाव ग्राहक द्रव्यार्थिक नय जाणवो जेम आत्मा ज्ञानरूप छे.

इत्यादिक द्रव्यार्थिक नयना दश भेद कह्या. हवे पर्यायार्थिक नयना छ भेद कहे छे.

जे पर्यायने ग्रहे तेने पर्यायार्थिक नय कहे छे, तेना छ भेद नीचे प्रमाणे

एक द्रव्य पर्याय, बीजो द्रव्य व्यंजन पर्याय, त्रीजो गुणपर्याय, चोथो गुण व्यंजन पर्याय, पांचमो स्वभाव पर्याय, छठ्ठो विभाव पर्याय.

१ जीवने भव्यपणु तथा सिद्धपणुं क हेवुं ते द्रव्यपर्याय

२ जे द्रव्यना प्रदेशनु मान ते द्रव्य व्यंजनपर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय. जेम ध र्माधर्मादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्य- ञ्जनपर्याय कहीए.

५ स्वभाव पर्याय ते अगुर लघु पर्या- यथी जाणवो ए पांच पर्यायो सर्व द्रव्य मा छे.

६ विभाग पर्याय ते जीव, पुद्गल, ए

चे द्रव्यमा छे. जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे, ते जीवमा विभाव पर्याय तथा पुद्गलमा खधपणु ते विभावपर्याय जाणवो.

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे— एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्रव्य-नो मेरु प्रमुख. बीजो सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था,सिद्धावगाहनादिक

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समय-मा द्रव्य उपजे विणसे छे ते. "सादिसा-त पर्याया भव शरीराध्यवसायादय" इति नयचक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे ते वडे कहेवो. पांचमो उपाधि पर्याय ते कर्म संबध छट्ठो शुद्ध पर्याय जे मूळ पर्याय सर्व द्रव्यना एक सर खा छे ते. एवं पर्यायार्थिकनुं स्वरूप कह्युं.

नयचक्र तथा आगमसार कर्त्ताना मते बीजा पर्यायना छ भेदया तफावत पडे छे. तत्त्व-वैचारिगम्यम्

सातनय.

१ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभुत ए सात नयना नाम जाणवा

१ नैगमनय

नथी एक गमो ते जेनो तेने नैगमनय कहे छे, गुणनो वा कार्यनो एक अंश उपन्यो होय तो ते नैगमनय कहीए, जेम कोइ मनुष्यने पाळी लाववानु मन थयु त्यारे ते वगडामा लाकडा लेवा चाल्यो, तेने रस्तामा बीजो कोइ माणस भेगो थयो तेणे पूछयु

के, तु क्यां जाय छे ते वारे तेणे कह्युं के हुं पाली लेवा जाउं छुं. ते पाली तो हजु थई नथी, पण मनविषे चिंतव्युं ते थइ एम गण्युं. तेम नैगम नय सर्व जीवने सिद्ध समान कहे छे कारण के सर्व जीवोना आठ रूचक प्रदेश निर्मळ सिद्ध समान छे, तेथी एक अंशे सिद्ध छे, ते माटे सिद्ध समान सर्व जीव कह्या. ते नैगम नयना त्रण भेद छे. अतीत नैगम, अनागत नैगम, अने वर्त्तमान नैगम. आ प्रमाणे आगमसार ग्रंथमां कह्युं छे

नयचक्र बालावबोधमां नैगमनयना त्रण भेद कह्या छे. १ आरोप २ अंश ३ संकल्प. तथा विशेषावश्यकमां चोथो भेद पण उपचारपणे कहे छे. नयी एकगमो–अ-

भिमाय ते जेनो तेने नैगमनय कहे छे. नैगमनय अनेक आशयी छे, ते नैगमनयना चार भेद छे, नैगमना भेद पैकी आरोप नैगमना चार प्रकार छे.

१ द्रव्यारोप, २ गुणारोप, ३ कालारोप, कारणाथारोप

१ गुणादिकमा द्रव्यपणो मानवो ते द्रव्यारोप जेम वर्तना परिणाम ते पचास्तिकायनो परिणमन धर्म छे, तेने काल द्रव्य कहीने बोलाव्यो. ए काल ते भिन्न पिंड रूप द्रव्य नथी, पण आरोपे द्रव्य छे, माटे द्रव्यारोप जाणवो. द्रव्यने गुणनो आरोप ते जेम ज्ञान गुण छे, पण ज्ञानी तेम आत्मा, एम ज्ञानने आत्मा कह्यो, ते गुणारोप जाणवो तथा जेम श्री महावीर स्वा

वीरनुं निर्वाण थयां घणो काळ गयो छे, पण आज दीवालीना दीवसे वीरनिर्वाण छे, एम जे कहेवुं, ते वर्तमानकालमां अतीत कालनो आरोप कर्यो जाणवो तथा आज श्री पद्मनाभ प्रभुनो निर्वाण छे, एम जे कहेवुं ते वर्तमान काळमा अनागतकालनो आरोप. एवी रीते अतीतना बे भेद छे. तथा अनागतना बे भेद छे. तथा वर्तमानना पण बे भेद छे ते सर्व मळी काळारोपना छ भेद जाणवा. चोथो वळी कारणविषे कार्यनो आरोप करवो ते कारणाद्यारोप जाणवो.

ते कारण चार छे. १ उपादान कारण, २ निमित्त कारण, असाधारण कारण, ४ अपेक्षा कारण, तेमां बाह्य द्रव्य क्रिया ते साध्य सापेक्षवाळाने धर्मनु निमित्त कारण

छे तोपण तेने धर्मकारण कहीए. तेमज श्री तीर्थंकर मोक्षनुं कारण छे तेथी तेमने 'तारयाण' कह्या ते कारणमां कर्त्तापणानो आरोप कर्यो. एम आरोपता अनेक प्रकारे छे ते कारणाधारोप

वळी संकल्प नेगमना बे भेद छे १ स्वपरिणामरुप वीर्य चेतनानो जे नवो नवो क्षयोपशम केवो ते २ कार्यांतरे नवे नवे कार्ये नवो नवो उपयोग थाय ते. ए बे भेद थया. तथा अंश नैगमना पण बे भेद छे. १ भिन्नांश ते जुदो अंश, स्कंधादिकनो. बीजो अभिन्नांश ते जे आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविभाग इत्यादिक ए सर्व नैगमनयना भेद जाणवा

(२) सग्रहनय.

सामान्यवस्तुसत्ता संग्राहक सग्रहःसद्विविधः सामान्य सग्रहः विशेषसंग्रहश्च सामान्य सग्रहो द्विविधः मूलतउत्तरतश्च मूलतोऽस्तित्वा दिभेदतः षड्विध उत्तरतो जाति समुदाय भेदरुप' जातितः गवि गोत्वं, घटे घटत्व, वनस्पतौ वनस्पतित्व, समुदायतो सहकारात्मके वने सहकारवन, मनुष्यसमुहे मनुष्य वृद इत्यादि समुदायरुपः अथवा द्रव्यमिति सामान्य संग्रहः जीव इति विशेष संग्रहः

अर्थः सामान्ये करी मूळ सर्व द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्या जे धर्म तेनो जे संग्रह करे तेने संग्रहनय कहे छे.

तेना बे भेद छे. १ सामान्य संग्रह २ विशेष संग्रह.

सामान्य संग्रहना २ भेद छे. १ मृ
सामान्यसंग्रह, २ उत्तर सामान्यसंग्रह. व
मूळ सामान्यना अस्तित्व, वस्तुत्व द्रव्य
प्रमेयत्व, सत्त्व, अगुरुलघुत्व ए छ भेद
तथा उत्तर सामान्यना बे भेद छे

१ जाति सामान्य, २ समुदाय सामा
तत्र गायना समुहमा गोत्वरूप जाति छे, त
घट समुदायमां घटत्व अने वनस्पतिमा व
स्पतिपणो ते जाति सामान्य थयो। अथवा
समूहने एव वन कहे, तथा मनुष्यना समु
मनुष्य ग्रहण थाय, ते समुदाय सामा
उत्तर सामान्य ते चक्षुदर्शन तथा अचक्षुद
ग्राही छे, अने मूळ सामान्य ते अवधि
तथा केवळ दर्शनथी ग्रहवाय छे.

अथवा छ द्रव्यना समुदायने द्रव्य

हेतु, ए सामान्य संग्रह अने जीवने जीव द्रव्य कही अजीव द्रव्य थकी जुदो पाडवो ते विशेष संग्रह. विशेषावश्यकमां संग्रहनयना चार भेद कह्या छे. १ संग्रहीत संग्रह, २ पिंडित संग्रह, ३ अनुगम संग्रह, ४ व्यतिरेक संग्रह.

१ सामान्यपणे वहेंचण विना ग्रहण थाय एवो जे उपयोग अथवा एवु जे वचन अथवा एवो धर्म कोईपण वस्तुने विषे होय तेने संग्रहित संग्रह कहीए.

२ एक जाति माटे एकपणो मानीने ते एक मध्ये सर्वनो ग्रहण थाय जेम "एगे आया" "एगे पुग्गले" इत्यादि वस्तु अनंति छे पण जाति एक

ाहण थाय छे ते बीजो पिंडित संग्रह-
हीए.

जे अनेक जीवरूप अनेक व्यक्ति छे
ा पामीए, "जेम सचिन्मय आत्मा"
वे जीव तथा सर्व प्रदेश अने स-
जीवना लक्षण छे, ते अनुगम संग्र
ाए.

ा ना कहेवाथी तेनाथी इतरनो
पणे ज्ञान थाय ते, जेम अजीव ठे
जीव नही ते अजीव कहीए, एटले
ाव छे एम व्यतिरेक वचने ठर्यो.
ागे जीवनो संग्रह थाय छे, ते
ग्रह कहीए

नाम लीधाथी सर्व गुण पर्याय प-
त आवे ते संग्रहनय जाणवो

दृष्टांत—जेम कोइक मनुष्ये प्रभाते दातण करवाने अर्थे पोताना घरना बारणे बेसीने चाकरने कह्युं के दातण लेइ आवो। तेथी चाकर पुरुष, पाणीनो लोटो, रुमाल, दातण एम सर्व चीज लइ आव्यो शेठे तो एक दातण नाम लइने मंगाव्युं हतुं, पण सर्वनो संग्रह करी चाकर लइ आव्यो ते रीते संग्रहनय जाणवो

(३) व्यवहारनय

"संग्रहगृहीतवस्तु भेदांतरेण विभजन व्यवहरण, प्रवर्तनं वा व्यवहारः सद्विविध. शुद्धोऽशुद्धश्च ॥

संग्रहनये ग्रहीत जे वस्तु तेने भेदांतरे वहेंचवु, तेने व्यवहारनय कहे छे. जेम द्रव्य

एवु सामान्य नाम कह्यु. तेमा वळी वेहेंचण करीए जे द्रव्यना वे भेद छे. एक जीव द्रव्य तथा बीजु अजीव द्रव्य, तेमा पण वहेंचण करीए जे जीवना वे भेद छे एक ससारी बीजा सिद्ध, वळी तेमा पण संसारीना वे भेद छे. एक स्थावर, बीजो त्रस. तेमा स्थावरना पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, अने वनस्पतिकाय, ए पांच भेद छे. त्रसना चार भेद छे बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री, अने पचेंद्री. पञ्चेन्द्रियना देवता, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी एम चार भेद छे. एम उत्तरोत्तर जीवना ५६३ भेदनी वहेंचण करवी इत्यादिक सर्व व्यवहारनयनो स्वभाव जाणवो. अथवा प्रवर्तन व्यवहारना वे भेद छे १ शुद्ध व्यवहार २ अशुद्ध व्यवहार.

सर्व द्रव्यनी स्वरुप शुद्ध प्रवृत्ति–जेम धर्मास्तिकायनी चलण सहायता तथा जीवनी ज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगत शुद्ध व्यवहार कहीए.

द्रव्यनो उत्सर्ग नीपजवा माटे जे रत्नत्रियनी शुद्धता, गुणस्थाने श्रेणि आरोहणरुप ते साधन शुद्ध व्यवहार कहीए.

अशुद्ध व्यवहारना बे भेद छे १ सद्भुत व्यवहार २ असद्भुत व्यवहार. तेमा जे क्षेत्रे अवस्थाने अभेद रह्या जे ज्ञानादिगुण तेने परस्पर भेदे कहेवा, ते सद्भुत व्यवहार. तथा हुं क्रोधी छुं, हुं मानी छुं, अथवा देवता छुं, मनुष्य छु, इत्यादि देवतापणे ते हेतुपणे परिणमतां थया जे देवगति विपाकी कर्म तेने उदयरुप प्रभाव छे

ज्ञान विना भेद ज्ञानशून्य जीव ते एक करी माने छे, ते असद्भूत अशुद्ध व्यवहार कहीए. तेना २ भेद छे.

१ आ शरीर मारु छे, हु शरीरी छु इत्यादि कहेवु तेने सश्लेषित असद्भूतव्यवहार जाणवो.

२ आ पुत्र मारो, आ स्त्री, कुटुंब, धनधान्यादिक नवविध परिग्रह मारो छे एम जे कहेवु ते असश्लेषित असद्भूत व्यवहारनयथी जाणवु. ते असश्लेषित असद्भुत अशुद्ध व्यवहारना वे भेद छे एक उपचरित अने बीजो अनुपचरित.

विशेषावश्यक महाभाष्यमां व्यवहारनयना मूल वे भेद छे.

१ वेहचणरूप व्यवहार.

२ प्रवृत्तिरुप व्यवहार.

प्रवृत्ति व्यवहारना त्रण भेद छे. वस्तुप्रवृत्ति, साधनप्रवृत्ति, लौकिकप्रवृत्ति. तेमां साधन प्रवृत्तिना त्रण भेद छे.

१ जे अरिहंतनी आज्ञाए शुद्ध साधन मार्गे इह लोक संसार पुद्गल भोग आसंसादिदोष रहीत जे रत्नत्रयिनी परिणति, परभव त्याग सहित ते लोकोत्तर साधन प्रवृत्ति नामे पहेलो भेद जाणवो.

२ स्याद्वाद विना मिथ्याभिनिवेष सहित साधन प्रवृत्ति ते दु:प्रावचनिक साधन प्रवृत्ति.

३ लोकनी स्व स्वदेश कुलनी चाले प्रवृत्ति ते लोक व्यवहार प्रवृत्ति ए त्रण प्रकारनी प्रवृत्ति जाणवी.

बाह्य स्वरूप देखीने भेदनी वेहेंचण करे
अने जे बाह्य देखाता गुणनेज माने पण
अतरग सत्ताने न माने, तेने व्यवहारनय क
छे, आ नयमा आचार क्रिया मुख्य छे
व्यवहारनये जीवनी अवस्था अनेक
प्रकारे छे

वळी व्यवहारनयना बे भेद छे:

१ शुद्ध व्यवहार, ते पूर्वना गुण
ठाणानुं छोडवुं, अने उपरना गुणठाणा
ग्रहण करवुं, तेने शुद्ध व्यवहारनय कहे
अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण ते निश्च
नये एक रूप छे, पण ते शिष्यने समजावव
जुदा जुदा भेद करवा ते शुद्ध व्यवहारन
जाणवो

२ जीवमां अज्ञान रागद्वेष लाग्या छे ते अशुद्धपणो छे माटे अशुद्ध व्यवहार जाणवो.

३ पुण्यनी क्रिया करवी वा शुभपरिणति प्रवृत्ति ते शुभ व्यवहार.

४ पापनी क्रिया करवी वा अशुभ परिणति प्रवृत्ति ते अशुभ व्यवहार.

५ धन कुंटुंब प्रत्यक्षपणे पोतानाथी जुदा छे पण जीवे पोताना करी जाण्या छे ते उपचरित व्यवहार.

६ शरीर, लेश्या, योग अने इंद्रिय इत्यादि वस्तुओ पोताना आत्मा थकी जुदी छे तेने आपणी करी जीव माने छे ते अनुपचरितव्यवहारनय मतथी जाणवुं.

इत्यादि व्यवहारनयनुं स्वरूप जाणवुं.

ऋजुसूत्र वर्तमानग्राहक तद् वर्तमान नामादि चतुष्प्रकारं प्राह. नय चक्र कर्त्ता ऋजुसूत्रनयमां नाम, स्थापना, द्रव्य, अने भाव ए चार निक्षेपा ग्रहण करे छे.

५ शब्दनय

जे वस्तु गुणवंत, तथा निर्गुणवंत होय, तेने नाम करी बोलावीए जे भाषा वर्गणा थी शब्दपणे गोचर थाय, ते शब्दनय, ए कारणथी अरुपी द्रव्य वचनथी ग्रह्या जा नहीं पण वचनथी कहेवा ते शब्दनय कहीए अहीं जे शब्दनो अर्थ ते पणो जे वस्तुमां वस्तुपणे पामीए, त्यारे ते वस्तु शब्दनये कहीए. जेम घटजी चेष्टाने करतो होय ते घट कहेवाय. ए शब्दनयमां व्याकरणर्य

वर ध्याने, जिनप्रतिमा पूजतां लाभ थाय छे.

३ जेनुं नाम होय, तथा आकार स्थापना गुण पण होय, अने लक्षण पण होय, पण आत्मानो उपयोग मळे नहीं, तेने द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. अज्ञानी जीव ते जीव स्वरुपना उपयोग विना द्रव्यजीव छे. " अणुवओगोदव्वम् " इति अनुयोगद्वार वचनात् वळी कह्यु छे के सिद्धांत भणतां पुछतां पद, अक्षर, मात्रा, शुद्ध अर्थ करे छे, अने गुरु मुखे सदहे छे, ते पण शुद्ध निश्चयनये पोतानी सत्ता ओळख्या विना सर्व द्रव्यनिक्षेपमां छे. जे भावविना द्रव्यपणु छे, ते पुण्यबंधनुं कारण छे, पण मोक्षनु कारण नथी. एटले जे धर्म करणीरुप कष्ट तपस्या करे छे, पण जीव, अजीव पदार्थनी सत्ता ओळखतो नथी,

जाणवो. ए स्थापना निक्षेपो नाम निक्षेपा स
हित होय छे, जेम स्थापनासिद्ध जिनप्रतिम
प्रमुख ते सद्भाव स्थापना अने असद्भाव
स्थापना पण होय छे. अकृत्रिम जिनप्रतिमा
ते नंदीश्वरद्वीप प्रमुखमां, अने जे अज्ञानी
प्रतिमा ते कृत्रिम, ते सर्व स्थापना जाणवी
जेम चित्रामणनी स्त्री ज्यां होय त्यां
साधु रहे नहीं. कारण के स्थापना स्त्री छे
ते स्त्री तुल्य जाणवी. तेमज जिनप्रतिमा जिन
सरखी जाणवी काली दोरीने सापनी बुद्धि
थी हणता सापनी हिंसा लागे छे, तेम जिन
प्रतिमाने जिननी बुद्धिए पूजता-मानत
आत्महित जाणवु.

चित्रामणनी मूर्तिने हिंसाना परिणाम
थकी फाडे तेने हिंसा लागे छे, तेमज जिन

र ध्याने, जिनप्रतिमा पूजता लाभ थाय छे.

३ जेनुं नाम होय, तथा आकार स्था-
ना गुण पण होय, अने लक्षण पण होय,
ण आत्मानो उपयोग मळे नहीं, तेने द्रव्य-
निक्षेपो जाणवो. अज्ञानी जीव ते जीव स्व-
पना उपयोग विना द्रव्यजीव छे. " अणु-
ओगोद्व्वम् " इति अनुयोगद्वार वचनात्
ळी कह्यु छे के सिद्धांत वाचतां पुछतां पद,
क्षर, मात्रा, शुद्ध अर्थ करे छे, अने गुरु
ुखे मदहे छे, ते पण शुद्ध निश्चयनये पोतानी
त्ता ओलख्या विना सर्व द्रव्यनिक्षेपमां छे.
ते भावविना द्रव्यपणु छे, ते पुण्यबंधनुं कारण
छे, पण मोक्षनु कारण नथी. एटले जे
र्म करणीरुप कष्ट तपस्या करे छे, पण
जीव, अजीव पदार्थनी सत्ता ओळखतो नथी,

जाणवो. ए स्थापना निक्षेपो नाम निक्षेपा स
हित होय छे. जेम स्थापनासिद्ध जिनप्रतिमा
प्रमुख ते सद्भाव स्थापना अने असद्भाव
स्थापना पण होय छे. अकृत्रिम जिनप्रतिमा
ते नंदीश्वरद्वीप प्रमुखमां, अने जे अशनी
प्रतिमा ते कृत्रिम, ते सर्व स्थापना जाणवी
जेम चित्रामणनी स्त्री ज्यां होय त्यां
साधु रहे नहीं. कारण ए स्थापना स्त्री छे
ते स्त्री तुल्य जाणवी तेमज जिनप्रतिमा जिन
सरखी जाणवी काली दोरीने सापनी बुद्धि
थी हणतां सापनी हिंसा लागे छे, तेम जिन
प्रतिमाने जिननी बुद्धिए पूजता-मानता
आत्महित जाणवुं.

चित्रामणनी मूर्तिने हिंसाना परिणाम
थकी फाडे तेने हिंसा लागे छे, तेमज जिन

सप्तभंगीनु स्वरूप.

१ स्यात् अस्ति. स्यात् कहेतां अ
कान्तपणे सर्व अपेक्षा लेइने जीवद्रव्य
आपणो द्रव्य, आपणो क्षेत्र, आपणो काळ
तथा आपणो भाव एम स्वगुण पर्याये करी
छे, तेम सर्व द्रव्य आपणे गुण पर्याये छे
स्यात् अस्ति नामनो पहेलो भागो जाणवो

२ स्यान्नास्ति. जीवद्रव्यमा बीजा पर
द्रव्यना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव नथी, एम
नास्तिपणो जीव द्रव्यमां

१ अनुमान प्रमाण, २ आगम प्रमाण ३ उपमान प्रमाण.

१ कोइक सहीनाण-चिह्न देखीने जे ज्ञान थाय. जेम यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः जे जे ठेकाणे धूम्र होय ते ते ठेकाणे अग्नि होय. एटले धूम्रने देखीने जे अग्निनुं अनुमान थयुं, ते अनुमान प्रमाण.

२ शास्त्रनी साक्षीथी जे वात जाणीए. जेम देवलोक, नरक, निगोद विगेरेनो विचार आगमथी जाणीए छीए, ते आगम प्रमाण छे.

३ कोइक वस्तुनो दृष्टांत आपीने वस्तुने ओळखाववी ते उपमान प्रमाण जाणवु

प्रमाण

हवे प्रमाण बतावे छे.–प्रमाणना बे भेद छे (१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२) परोक्ष प्रमाण

१ जे जीव पोताना उपयोगथी साक्षात् द्रव्योने जाणे, तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे. जेम केवली छ द्रव्य प्रत्यक्षपणे जाणे छे, तथा देखे छे, ते माटे केवलज्ञान सर्वथी प्रत्यक्ष ज्ञान छे. मन पर्यव ज्ञान, ते मनोवर्गणा प्रत्यक्ष जाणे, तथा अवधिज्ञान, ते पुद्गल द्रव्यने प्रत्यक्ष जाणे छे माटे ए बे ज्ञान देश प्रत्यक्ष छे

२ मतिज्ञान अने श्रुतज्ञाननो उपयोग ते परोक्ष प्रमाण छे.

परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद छे.

१ अनुमान प्रमाण, २ आगम प्रमाण ३ उपमान प्रमाण.

१ कोइक सहीनाण–चिह्न देखीने जे ज्ञान थाय. जेम यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः जे जे ठेकाणे धूम्र होय ते ते ठेकाणे अग्नि होय. एटले धूम्रने देखीने जे अग्निनुं अनुमान थयुं, ते अनुमान प्रमाण.

२ शास्त्रनी साक्षीथी जे वात जाणीए. जेम देवलोक, नरक, निगोद विगेरेनो विचार आगमथी जाणीए छीए, ते आगम प्रमाण छे.

३ कोइक वस्तुनो दृष्टांत आपीने वस्तुने ओळखाववी ते उपमान प्रमाण जाणवुं

सप्तभंगीनु स्वरूप

१ स्यात् अस्ति. स्यात् कहेता अने
कान्तपणे सर्व अपेक्षा लेइने जीवद्रव्यमा
आपणो द्रव्य, आपणो क्षेत्र, आपणो काल,
तथा आपणो भाव एम स्वगुण पर्याये जीव
छे, तेम सर्व द्रव्य आपणे गुण पर्याये छे. ते
स्यात् अस्ति नामनो पहेलो भागो जाणवो

२ स्यान्नास्ति. जीवद्रव्यमा बीजा पाच
द्रव्यना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव नथी, एटले
पर द्रव्यना गुणनो नास्तिपणो जीव द्रव्यमा
छे, ए स्यात् नास्ति नामे बीजो भागो थयो

३ स्यात्अस्तिनास्ति द्रव्य स्वगुणे अ
स्ति अने परगुणे नास्ति ए बे भागा एक

समये द्रव्यमां छे, जे समयमां शुद्ध स्वगुणनी अस्ति छे तेज समयमां परगुणनी नास्ति पण छे. " यस्मिन् समये शुद्ध स्वगुणस्य अस्तिता आत्मनि तस्मिन् समये एव परगुणस्य नास्तिता आत्मनि गो या. " माटे अस्ति नास्ति ए बे भागा एक समयमा भेला छे. ते स्यात्अस्तिनास्ति त्रीजो भागो थयो.

४ स्यात्अवक्तव्य. अस्ति अने नास्ति ए बे भागा एक समयमा छे, तो वचने करी अस्ति एटलु बोलता असख्याता समय लागे, तेथी नास्ति भागो तेज वखते कहेवाय नहीं, अने जो नास्ति भागो कह्यो तो अस्तिपणो न आव्यो, माटे एकज अस्ति कहेता थका नास्तित्व तेज

समये द्रव्यमां छे, ते कहेवाणो नहीं. माटे मृषावाद लागे, तेमज नास्ति कहेता अस्तिनो मृषावाद लागे, माटे वचने करी अगोचर छे. एक समयमां बे भागा वचने करी कहा जाय नहीं कारण के एक अक्षर बोलता असंख्याता समय लागे छे, माटे वचनथी अगोचर छे, ते स्यात् अव क्तव्य चोथो भागो जाणवो.

५ अवक्तव्यपणो वस्तुमां अस्तित्वनो पण छे माटे स्यात् अस्ति अवक्तव्य ए पांचमो भागो जाणवो.

६ नास्तित्वनो पण अवक्तव्य पणो वस्तु मध्ये छे माटे स्यात् नास्ति अवक्तव्य ए छट्ठो भांगो जाणवो.

७ अस्तित्व तथा नास्तित्व एटले अ

स्तिपणुं तथा नास्तिपणुं एम बे धर्म एक समये वस्तुमा छे पण वचन थकी कहा जाय नहीं, माटे स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य ए सप्तमो भांगो जाणवो.

नित्यानित्यत्वादि अनेक धर्ममा सप्तभंगी लागु पडे छे.

१ स्यात् नित्यम् २ स्यात् अनित्यम् ३ स्यात् नित्यानित्यम् ४ स्यात् अव्यक्तव्यम् ५ स्यात् नित्य अवक्तव्यम् ६ स्यात् अनित्यं अवक्तव्यम् ७ स्यात् नित्यानित्यम् युगपत् अवक्तव्यम् ए सात भागा जाणवा.

तेमज एक अनेकना सात भागा जाणवा तथा गुणपर्यायमां पण कहेवा. केमके सिद्ध मध्ये नय नथी तोपण सप्तभगी तो छे.

ए सप्तभंगीमा स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अवक्तव्य ए त्रण भांगा सकल देशी छे अने बाकीना चार भांगा विकल देशी छे.

“ त्रिभङ्गी ”

त्रण दशा बतावे छे १ बाधक २ साधक ३ सिद्ध.

१ मिथ्यात्व दशा ते बाधक दशा जाणवी २ समकित गुणठाणाथी मांडीने अयोगी केवळी गुणठाणा सुधी साधक दशा जाणवी. ३ सर्व कर्मथी रहित सिद्ध दशा जाणवी

(१) शब्दनुं जाणपणो ते जीवनो गु जाणवो, (२) तेनो ज्ञाता जीव, (३) ज्ञेय सर्व द्रव्य.

(१) ध्यान ते जीवना स्वरुपनुं. (२) ध्याननो याता जीव, (३) ध्येय ते आत्मानुं स्वरुप.

आत्माना त्रण भेद छे. १ बहिरात्मा, २ अन्तरात्मा, ३ परमात्मा. १ शरीर, मन, लेश्या, अने इंद्रियादि वस्तुने अज्ञानी जीव आत्मबुद्धिए माने ते पहेलो बहिरात्मा जाणवो. दुहा—पुद्गलमां राची रहे पुदगल सुखनिधान, तस लाभे लोभ्यो रहे, बहिरातम अभिधान ॥ १ ॥ पुद्गलथी न्यारो नहीं, आतम एवी बुद्धि, बहिरातम सुख शुं लहे, प्रगटे नहीं स्वशुद्धि. ॥ २ ॥

२ देह सहित जीव छे पण निश्चये सत्ता गुणे सिद्ध समान छे, एटले पोताना जीवने सिद्ध करी ध्यावे ते अंतरात्मा जाणवो.

पुद्‌गल वस्तु पोताना आत्मानी नथी आत्माथी शरीर, इंद्रिय, अने लेश्या वगेरे भिन्न छे. आत्मा अरूपी छे, पुद्‌गल (कर्मरूप) रूपी छे, आत्मा चेतना सहीत छे कर्म जड छे, आत्माने चार गतिमां भटकवानु कारण कर्म छे, ते मारी वस्तु नथी, पण पर वस्तु छे अरे हु ए पर वस्तुने पोतानी मानी बेठो छु, अने तेथी हु दु.खी थाउ छु हे चेतन! तु अरुपी अनंत गुणनो भोक्ता छे. आठ कर्मना नाशथी तु परमात्मा शुद्धात्मा स्वरुप थइश कर्म रहित जेवा सिद्धना जीवो छे, तेवो सत्ताए तुं पण छे. कर्मना आवर णथी तारा गुण दबाइ गया छे. इत्यादि पोताना आत्माने सिद्ध समान ध्यातवो ते अन्तरात्मानु लक्षण छे.

। ३ सर्व कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या
तेवा अरिहंत तथा सिद्ध सर्व परमात्मा
जाणवा.

इवे द्रव्य मध्ये छ सामान्य गुण कहे छे.

१ अस्तित्व–ते छ द्रव्य आपणा गुण-
पर्याय प्रदेशे करी अस्ति छे, तेमां धर्म, अध-
र्म, आकाश अने जीव ए चार द्रव्यना असं-
ख्याता प्रदेश मली खध छे, अने पुद्गलमा
खध थवानी शक्ति छे, माटे ए पाच द्रव्य
अस्तिकाय छे, अने छट्ठो काळ द्रव्यनो समय
छे, ते कोइ कोइथी मळतो नथी, कारण के
एक समय विणश्या पछी बीजो समय आवे
छे, माटे काल अस्तिकाय नथी. ए द्रव्यमा
अस्तित्व कह्यो.

२ वस्तुत्व–एटले छ द्रव्यमा वस्तुपणो

कहे छे. ते द्रव्य एकठा एक क्षेत्र मध्ये रह्या छे. एक आकाश प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छे, तथा अधर्मास्तिकायनो पण एक प्रदेश रह्यो छे, आगमसार कर्त्ताना मत प्रमाणे जीव अनंताना अनंत प्रदेश रह्या छे एम लख्युं छे आकाशना एक प्रदेशे आत्माना सर्व प्रदेशो रही शकता नथी. एम अन्यागमोथी जणाय छे.* पुद्गल पर

आत्माना एक प्रदेशनी अवगाहना एक आकाश प्रदेश प्रमाण होवाथी एक आत्माना असंख्याता प्रदेशो एक आकाश प्रदेशे रही शके नहीं पण अनंत आत्माना अनंत प्रदेशो एक आकाश प्रदेशे रही शके छे कारणके लोकाकाशना प्रदेश जेटला निगोदना गोला छे एक एक गोलामां असंख्याती निगोद छे ते एक निगोदमां अनंत जीवना अनंत प्र

माणुआ अनंता रह्या छे. ते सर्वे पोतानी सत्ता लेइने रह्या छे, पण कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य साथे मळी जतु नथी ते वस्तुपणुं जाणवु.

२ द्रव्यत्व–कहेतां द्रव्यपणो ते सर्वे द्रव्य पोतपोतानी क्रिया करे छे. धर्मास्तिकायमा चलन सहाय गुण ते सर्वे प्रदेश मपे छे. सदा पुद्गळ तथा जीवने चलन सहकार रुप क्रिया करे छे.

प्रश्न–लोकातसिद्ध क्षेत्रमा धर्मास्तिकाय छे ते सिद्धना जीवोने चलाववामा सहाय क्रिया केम करतु नथी ?

देखो रहेल छे माटे पहले आगमसार कर्ताना तथा अन्यागमों मतेनो मत अपेक्षाए सत्य छे

उत्तर–सिद्धना जीवो अक्रिय छे, माटे चालता नथी, पण ते क्षेत्रमा सूक्ष्म निगोद ना जीव तथा पुद्‌गल छे, तेने धर्मास्ति काय चलन सहाय आपे छे, पण सिद्धना जीवो अक्रिय छे, तेथी तेमने चलण सहाय आपतो नथी. पुद्‌गल सक्रिय छे, पण पुद्‌गल सग त्यागी जे सिद्ध थया ते तो अक्रिय छे, अने अक्रिय एवा सिद्धना जीवो चाली शकता नथी. जे वस्तु सक्रिय होय छे, गति करी शके छे, तेने धर्मास्तिकाय चालवामा सहाय आपे छे, पण अक्रिय एवा सिद्धना जीवो गति करता नथी, तेथी तेमने चालवामा सहाय आपी शकतु नथी सिद्धात्माओ अक्रिय छे, माटे तेने चलण सहाय आपतो नथी. ते सिद्धना जीवो निश्चल स्वस्वरपी छे.

अधर्मास्तिकाय जीव, तथा पुद्गलने स्थिर राखवानी क्रिया करे छे तथा आकाश द्रव्य ते सर्व द्रव्यने अवगाहना गुणरुप दान आपे छे.

प्रश्न–अलोकाकाशमां बीजुं कोइ द्रव्य नथी, तो अलोकाकाश कया द्रव्यने अवगाहना दान आपे छे ?

उत्तर–अलोकाकाशमा अवगाहना दान देवानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज छे, पण त्यां अवगाहना दान लेनार कोइ द्रव्य नथी, माटे अवगाहना दान करतुं नथी तेथी अलोकाकाशमाथी अवगाहना गुण शक्ति, जे स्वभावे छे तेनो नाश थतो नथी. अलोकाकाशमा अवगाह गुणमा अगुरु लघुपर्यायपयोगेषड्गुण हानि वृद्धिचक्र चाली रह्यु छे.

पुद्गल द्रव्य मिलवा विखरवारूप क्रिया कर्या करे छे. कालद्रव्य वर्तनारूप क्रिया कर्या करे छे. जीव द्रव्य ज्ञानलक्षण उपयोग रूप क्रिया करे छे. ए द्रव्यपणु षड्द्रव्योमा कह्यु.

४ प्रमेयत्व–ए प्रमेयपणो छ द्रव्यमा छे. तेनो प्रमाण केवली पोताना ज्ञानथी करे छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाश ए एकेक द्रव्य छे. अने जीव द्रव्य अनंता छे तेहनी गणतरी बतावे छे. सन्नी मनुष्य संख्याता छे, असन्नी मनुष्य असंख्याता छे, नारकी असंख्याता छे, देवता असंख्याता छे, तिर्यंच पचेंद्रिय असंख्याता छे, द्विन्द्रिय असंख्याता छे, त्रीन्द्रिय असंख्याता छे, चतुरिन्द्रिय असंख्याता छे, ते

थकी पृथ्वीकाय असंख्याता छे, अप्काय असंख्याता, तेउकाय असंख्याता, वायुकाय असंख्याता, प्रत्येक वनस्पति जीव असंख्याता, ते थकी सिद्धना जीव अनंता, ते थकी बादर निगोदना जीव अनंतगुणा, बादर निगोद ते कंद, मूळ, आदु, सूरण, शकरीया, मुळा, प्रमुख एना सुइना अग्रभाग जेटला भागमा अनंता जीव रह्या छे, ते सिद्धना जीवथी अनंतगुणा छे, अने सूक्ष्म निगोदना जीवो सर्वथी अनंतगुणा छे.

सूक्ष्मनिगोद.

लोकाकाशना जेटला प्रदेश छे, तेटला निगोदना गोळा छे. ते एकेक गोळामां

असख्याति निगोद छे. अनता जीवोनु पि
ण्डभूत एक शरीर तेने निगोद कहे छे ते
माथी एक निगोदमा अनता जीव रह्या
अतीत कालना सर्व समय, तथा वर्तमानका
लनो एक समय, तथा अनागतकालना सर्व
समय, ते सर्वने भेला करीए अने तेने अ
नत गुणा करीए तेटला एक निगोदमा जीव
रह्या छे, एटले एक निगोदमा अनता जीव
रह्या छे, तेमाथी एक जीव ग्रहण करीए,
तेना प्रदेश असख्याता छे, अने एकेका प्रदेशे
अनंति कर्मनी वर्गणा लागी छे, ते एकेक
वर्गणा मध्ये अनता पुद्गल परमाणुआ छे,
एम अनता परमाणु जीवनी साथे लाग्या
छे, ते थकी अनतगुणा पुद्गल परमाणु
जीवथी रहित–छुटा छे.

गाथा.

गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोए हवइ गोलो, इक्किक्कमिनिगोए, अणता जीवा मुणेयव्वा ॥ १ ॥

अर्थ-लोकमाहे असंख्याता गोळा छे. एकेक गोळा मध्ये असंख्याती निगोद छे अने एकेक निगोदमां अनंता जीव छे.

गाथा.

सत्तरस समहिआ, किरइगाणु पाणंमि हुंति खुड्डभवा, सगतिससयतिहुत्तर, पाणु पुणइग मुहुत्तंमि.

अर्थ-निगोदिया जीव मनुष्यना एक श्वासोश्वासमां सत्तर भव झाझेरा करे छे.

मुहूर्तमा ३७७३ त्रण हजार सातसो तोतेर श्वासोश्वास थाय छे. तेटलामा निगो दिया जीव केटला भव करे ते बतावे छे.

पणसट्ठिसहस्सपणसय, छत्तिसा इग मुहूत्त खुड्डभवा, आवलियाण दोसय, छप्पना एगखुड्डभवे.

अर्थ-एक मुहूर्त्तमा निगोदना जीव ६५५३६ भव करे छे. निगोदनो एक भव २५६ आवलीनो छे. क्षुल्लक भवनो ए प्रमाण छे

गाथा-अथ्थि अणताजीवा, जेहिंनप त्तोतसाइ परिणामो, उववज्जति चयंतिय, पुणोवि तथ्थतथ्थेव ॥ निगोदमा अनताजीव एवा छे के जे जीवो े कोइ वखत

गम्या नथी. अनंतोकाळ पूर्वे गयो तो पण ते जीवो वारवार त्यांज उपजे छे, अने च्यवे छे, एम एक निगोदमा अनंताजीव छे. ते निगोदना बे भेद छे, १ एक व्यवहार राशिनिगोद, अने २ अव्यवहार राशिनिगोद, तेमा जे बादर एकेन्द्रियपणो-भावे त्रसपणो पामीने पाछा निगोदमा जइ पड्या छे, ते निगोदिया जीवने व्यवहार राशिया कहीए, अने जे जीव कोइपण काळे निगोदमाथी नीकळ्या नथी, ते जीव अव्यवहार राशिया कहीए.

इहा मनुष्यपणामाथी जेटला जीव कर्म खपावीने मोक्षे जाय छे, तेटला जीवो तेज समये अव्यवहारराशिसूक्ष्मनिगोदमाथी नीकळीने ऊंचा आवे छे, जो दशजीव मोक्षे

जाय तो दशजीव नीकळे कोइक वेळाए भव्यजीव ओछा नीकळे, तो एक बे अभव्य नीकळे, पण व्यवहार राशिमां कोइ जीव वधेघटे नहीं एवा निगोदना असंख्याता गोळा लोक मांहे छे. **घटे न राश निगोदकी वधे न सिद्ध अनन्त**

छदिशिना आव्या पुद्गलस्कंधो आहारपणे जे लेठे, ते सकलगोला कहेवाय छे, अने लोकांतना प्रदेशे जे निगोदना गोला रह्या छे, तेने त्रण दिशिना आहारनी स्पर्शना छे, माटे ते विकल गोला कहेवाय छे. ए सूक्ष्म निगोदमां अनंतु दुःख छे, तेनुं उदाहरण बतावे छे. सातमी नरकनु आउखु तेत्रीश सागरोपमनु छे, अने ते तेत्रीश साग

द्रव्योमा छे द्रव्यमा एक समयमा उत्पाद-व्यय थाय छे, अने तेज समयमा स्थिरपणे वर्ते छे. उत्पाद व्यय, अने ध्रुवपणो तेहीज सत्पणो छे. " उत्पाद् व्ययध्रुवयुक्त-सत् लक्षण द्रव्य " इति तत्त्वार्थ वचनात् तेने विस्तारथी बताबे छे

६ धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश छे. त्या एक प्रदेशमां अगुरु लघु असंख्यातो छे, अने बीजा प्रदेशमा अनतो छे. त्रीजा प्रदेशमा संख्यातो छे. एम असंख्याता प्रदेशमा अगुरु लघु पर्याय घटतो वधतो रहे छे, ते अगुरु लघु पर्याय चल छे, ते जे प्रदेशमा असंख्यातो छे, तेज प्रदेशमा अनतो थाय छ, अने अनताने ठेकाणे असंख्यातो थाय छे, अने असंख्याताने ठेकाणे संख्यातो

थाय छे एम लोक प्रमाण असंख्यात प्रदे-
शमा सर्व्वो समकाले फरे छे. जे प्रदेशमां असंख्यातो फिटीने अनतो थाय छे, ते प्रदेशमा असंख्यातपणानो विनाश अने अनंतपणानो उपजवो थाय छे, अने छ द्रव्यमा अगुरुलघुपणे गुण ध्रुव वर्त्ते छे, एम उपजवो, विणसवो, अने ध्रुव ए त्रण परिणाम छे, तेने उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव कहे छे.

अधर्मास्तिकायमा उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवरूप त्रणे परिणाम असंख्याता प्रदेशे सदा समय समयमां परिणमी रह्या छे. तेमा पण उपजवुं, विणसवुं, अने स्थिर रहेवुं, एम सत् लक्षण जाणवुं.

आकाशना प्रदेशमा पण एक समये त्रण परिणाम परिणमी रह्या छे. जीवना

असंख्याता प्रदेश छे तेमां पण उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव, ए त्रण परिणाम समय समये परिणमी रह्या छे तथा पुद्गल परमा णुआमां पण सदा समय समय, उत्पाद व्यय, अने, ध्रुव ए त्रण परिणाम परिणमी रह्या छे. कालनो वर्तमान समय मटीने अतीतकाल थाय छे, तो ते काळमां वर्तमानपणानो विनाश छे, अने अतीतपणानो उपजवो छे, तथा काळपणे ध्रुव छे, ए स्थूलथकी उत्पाद व्यय अने ध्रुवपणो कह्यो, अने वस्तुपणे मूल पणे ज्ञेयने पलटवे ज्ञाननो पण ते भासनपणे परिणमवो थाय थाय छे, तेमां पूर्वपर्यायना भासननो व्यय, अने अभिनवज्ञेय पर्यायना भासननो उत्पाद, तथा ज्ञानपणानो ध्रुव, ए रीते सर्वगुणना धर्मनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनो

उत्पाद, व्यय श्री सिद्ध भगवतमां पण समये समये थइ रह्यो छे.

ए धर्मास्तिकायना प्रदेशे जे क्षेत्रगत असंख्याता पुद्गल तथा जीवने पहेले समये चलण सहायीपणो परिणमतो हतो, तेज प्रदेशमा बीजा समयमां अनंत परमाणुआ तथा अनंतजीव प्रदेशने चलणसहायीपणो थयो तेवारे असंख्याता चलणसहायनो व्यय, अने अनंता चलणसहायनो उपजवो, अने चलणसहाय गुणपणे ध्रुव, एम धर्म द्रव्यमध्ये उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणो थइ रह्यो छे. ते प्रमाणे अधर्म, आकाशादि द्रव्यमा जाणवु. तथा वली कार्य कारणपणे उत्पाद, व्यय, तथा अगुरु लघुपर्यायना चल्लननो उत्पाद, व्यय, पंचास्तिकायमा कहेवो. तथा

काळद्रव्य ते उपचारथी द्रव्य छे, तेनु सर्व स्वरुप उपचारथीज कहेवुं ए रीते सर्व द्रव्य मा सत्पणो छे जो अगुरु लघुनो भेद न थाय, तो प्रदेशोनो माहोमाहे भेद थाय नहीं, माटे अगुरु लघुनो भेद सर्वमां छे.

॥ अगुरु लघु ॥

अगुरु लघुपणो कहे छे.

जे द्रव्यनो अगुरु लघु पर्याय छे, ते छ प्रकारनी हानि वृद्धि कर छे.

१ अनतभाग वृद्धि. २ असख्यात-भाग वृद्धि. ३ सख्यातभाग वृद्धि. ४ सख्यातगुण वृद्धि ५ असख्यातगुण वृद्धि. ६ अनतगुण वृद्धि.

ए छ प्रकारनी वृद्धि कही. हवे छ प्रकारनी हानि बतावे छे.

१ अनंतभाग हानि. २ असंख्यातभाग हानि. ३ संख्यातभाग हानि. ४ संख्यात गुण हानि. ५ असंख्यातगुण हानि. ६ अनंतगुण हानि ए छ प्रकारनी हानि समजवी.

सर्व द्रव्यमां ए छ प्रकारनी हानि तथा वृद्धि सदा समये समये थइ रही छे. उपजवो (उत्पाद) अने हानि थवेहतां (व्यय) थहीए, ए अगुर लघुत्व कयुं अगुरु लघु गुणने गोत्रकर्म रोके छे, ए अगुर लघु स्वभाव सदा समये समये द्रव्यमा परिणमे छे

ए छ द्रव्यमां जेटला सरखा गुण छे, तेने सामान्य गुण कहे छे.

जे गुण एक द्रव्यमा छे अने ते गुण बीजा द्रव्यमा नथी, तेने विशेष गुण कहे छे.

जे गुण कोइक द्रव्यमा छे, अने कोइक द्रव्यमा नथी, तेने साधारण असाधारण गुण कहे छे.

ए छ द्रव्यमा अनंतगुण, अनंतपर्याय, अने अनंतस्वभाव सदा शाश्वता छे. जेवी रीते श्री केवली महाराजे भरव्या, ते सर्व जे रीते छे, ते रीते शुद्ध सद्दहणापूर्वक यथार्थ उपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथी यथार्थपणे जाणवा सद्दहवा. एवुं निश्चयज्ञान ते मोक्षप्राप्तिनु कारणीभूत छे जे जीव ज्ञान पाम्यो, ते जीव विरती करे छे, तेज चारित्र जाणवुं. ज्ञाननु फळ विरतिपणु छे, ते मोक्षनु कारण छे.

४ चार ध्यान.

१ आर्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्लध्यान

१ आर्तध्यान अने २ रौद्रध्यान ए बे दुर्गतिहेतुभूत छे ए बे ध्यान अशुभ छे. भव्य प्राणीयोने ए बे ध्यान त्याग करवा योग्य छे. धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बे शुद्ध उपास्य छे.

आर्तध्यान.

मनमा आहट दोहट्टना परिणाम ते आर्तध्यान कहीए. आर्तध्यानना चार पाया छे.

१ इष्टवियोग २ अनिष्टसंयोग ३ रोगचिंता ४ अग्रशोच.

प्यकाल संबंधी शोच-एटले शोक विचार, चिन्तवन, शोच करवो ते अग्रशोच कहीए जो आ वर्षमा अमुक काम करशुं तो आवता वर्षमा अमुक लाभ थशे. दान, शीयल, अने तप वगेरेनु फल मागे के जो में तप, दान, शीयल पाळ्यु होत, तो आवता भवमा देवना थात, वा अमुक थात, चक्रवर्ति थात, राजा थात अने अमुकनो नाश करनार थात एवी आगला भवनी जे वाञ्छा तेने अग्रशोच कहे छे.

आर्तध्यानना चार पाया थकी जीव तिर्यंचनी गतिमा जाय छे. माटे भव्य प्राणि योए ए ध्यानथकी दूर रहेवु, आर्तध्यान रूप शत्रुनो मनमा वास करवा देवाथी आ त्मानी अनंतिऋद्धिनो नाश थाय छे. आत्मा,

खरेखर आर्तध्यानथी अनादिकाळथी रख-
ळ्यों, अने हजी जो एनो सग नहीं मूके तो
घणा भव भटकशे. जे आर्तध्यानने शत्रुरूप
जाणे छे, ते तेनाथी दूर रहेवा अतःकरणथी
मेहेनत करे छे. संसारमा भुंडनी पेठे रच्या
पच्या थका दुर्ध्यान ध्यावे छे, ते पामरो
अधोगतिने सेवे छे ससारमा कोइ कोइनु
नथी, चेतन पर-जड वस्तुने पोतानी मानी
अनता दुःख भोगवे छे. खरो शत्रु दुर्ध्यान
छे, ए दुर्ध्याने प्रसनचंद्रराजपिने सातमी
नरकना दलीया संचाव्या. (एकठा कराव्यां)
पण धर्मध्यान रूपी योद्धाए आवी दुर्ध्यानने
हठावी, मोक्षरूप स्त्रीनो मेळाप करावी आप्यो
आश्चर्य एटलुज थाय छे के जीव पोते हित
तथा अहितने जाणे छे, छता अहितमा वर्ते छे

निर्ग्रंथ महात्माओ हृदयरूप मन्दमां धर्माच सरखा आर्तध्यानने प्रवेश करवा देता नथी आत्महितैषिओए हु कोण छु, क्यांथी आव्यो, क्या जइश, मारं कोण, हु कोण, ए वाक्यनों उपयोग पूर्वक विचार करी त्याज्य वस्तुनो त्याग करवो एज हितकारक छे. वारवार आ मनुष्यजन्म पामवो दुर्लभ छे भव्यो ! ! ! जो धर्मसामग्री पामी प्रमाद करशोतो घणा भव भटकशो, अघोर दुःखमांथी छुटवानो आ उत्तम अवसर छे, एम ज्ञानीओ पुस्तकद्वारा जणावे छे.

आर्तध्यानना परिणाम पांचमा तथा छट्ठा गुणठाणा सुधी होय छे. कारण के छट्ठु गुणठाणु प्रमत्त छे, माटे त्यां ए ध्याननो परिणाम संभवे छे

२ रौद्र ध्यान.

१ हिंसानुबंधीरौद्रध्यान २ मृषानुबंधी-रौद्रध्यान ३ अदत्तानुबंधीरौद्रध्यान ४ परिग्रहानुबंधीरौद्रध्यान.

१ जे हिंसा करीने हर्ष पामे, बीजो कोइ हिंसा करतो होय तेने देखी खुश थाय. अथवा युद्धनी अनुमोदना (प्रशंसा) करे, तेने हिंसानुबंधी रौद्रध्यान कहे छे

२ जुठ बोली मनमा हर्ष पामे. अहो मे केवु कपट कर्यु के-मारा जुठापणानी कोइने खबर पडी नही एवो मृषावादरुप परिणाम, ते मृषानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

३ चोरी करी, ठगाइ करी मनमा राजी थाय, अने चिंतवे जे मारा जेवो कोण बळवान् छे, के जे पारको माल खाय छे. चोरोने चोरी करवामां सहाय आपवाना

९

माणस अंध समान बनी जाय छे, तेम माणस रौद्रध्यान रुप अंधारी अघोर रात्रीमा अज्ञानी बनी जाय छे अघोर रात्रीमा जेम चोरोनो प्रचार थाय छे, अने तेओ खातर पाडे छे, तेम रौद्रध्यानरुप अघोर रात्रीमा राग, द्वेष, मोह, माया अदेखाइ निंदा, क्लेश, चाडी, अने असत्यरुपी चोरो आत्मानी अनंत ऋद्धि लुंटे छे रौद्रध्यान रुप मदिरा अत्यन्त बेभान करतो छे तथा अनंत दु खना हेतुभूत छे. हे चेतन ! ! ! तु आपो आप विचार के रौद्रध्यानरुप शत्रु तने हित कर्ता ■ के अहितकर्ता छे ? हितकर्ता तो कदापिकाले कही शकाय नहीं, अने अहित करनार तो प्रत्यक्ष देखवामा आवे छे, छता तु केम तेनो संग छोडतो नथी ? शु तने

फइ पैसा थेसे छे ? ना तेम पण नथी. द्रढम-
हारी जेवा दिसके पण ए शत्रुनो संग
त्याग कर्यो त्यारे ते सुख पाम्यो, हे चेतन !!!
तुं विचार के ए रौद्रध्यानरूप शत्रुना वशमां
पडेलो मम्मण शेठ, तथा सभूम चक्रवर्ति
नरकनां महा रौरव दुःख भोगवे छे, तेम
छतां केम तुं कइपण मनमां विचार करतो
नथी. सूर्यने तथा चन्द्रने जेम राहु घेरे छे,
तेम तने रौद्रध्यानरूप राहु ग्रहण करे छे.
जेम कोयला खावाथी काळु मुख थाय छे,
तेम रौद्रध्यानथी समजवुं. लाखो शत्रुओने
जीतनाराओ पण रौद्रध्यानरूप शत्रुने जीती
शकता नथी, एवुं अशुभ, आत्मघाती, मलीन
रौद्रध्यान छे. एनो खतपूर्वक त्याग करवो,
एम हितकारी शिक्षण छे. ए बे ध्यानना

त्यारे हवे कोनो स्वीकार
, । तेवी आकांक्षा थता धर्म ध्याननो स्वीकार करवो एम शास्त्रकार जणावे छे,

३ धर्मध्यान.

दुर्गतिमां पडता प्राणीओने धारण करी राखे अर्थात् दुर्गतिमा पडवा दे नहीं अने उच्च गति आपे तेने सामान्य प्रकारे 'धर्म-ध्यान कहे छे.

निगोद स्वरुप जेवी रीते कह्युं छे, तेवी रीते हृदयमां धारे, यथातथ्य करी माने-सद्दहे. वीतरागनी आज्ञा नित्यानित्यपणे तथा निश्चय व्यवहारपणे माने, श्रद्धा करे, तथा उत्सर्ग अपवादपणे माने, श्रद्धा करे ते आज्ञा प्रमाणे जेने यथार्थ उपयोग भासन थयो, तेना हर्षथी ते उपयोग मध्ये निर्धार भासन, रमण, अनुभवता, एकता, तेमां तन्मयपणुं, ते ध्यानने आज्ञा विचय धर्मध्यान कहे छे

२ अपायविचय-जीवमां जे अशुद्धपणाथी कर्मना संयोगे संसारी अवस्थामां अनेक प्रकारना अपाय रुहेतां दूषण छे ते अज्ञान, राग, द्वेष, कषाय, अने आस्रव ते मारा नथी. तेना थकी हु अनंतोकाळ रखड्यो

अनेक प्रकारनी आकृतिने धारण करी चार गतिमा भम्या करु छुं ते अज्ञान, राग, द्वेष, मारो घात कर्त्ता छे. ते मारा थकी भिन्न छे. हु ते थकी जुदो छु, अनन्तज्ञान, अनन्त-दर्शन, अनन्त चारित्र अने अनन्त वीर्यमयी छु शुद्ध, बुद्ध, अविनाशी छु, अज अनादि अनन्त, अक्षय, अमर, अचल, अकल, अमल, अगम्य, अनामी, अरूपक, अकर्मी, अरूपी, अछेदी, अभेदी, अवेदी, अलेशी, अयोगी, अभोगी अरोगी, अकषायी, अखेदी अशरीरी, अनाहारी, अव्याबाध अन वगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अयोनि, अ प्राणी, अतीन्द्रिय, अमर, अपर, अपरम्पर, अव्यापी, अनाश्रित, अकंप, अविरुद्ध, अ शोकी, असंगी, लोकालोकज्ञायक, शुद्ध अने

चिदानंदमय मारो आत्मा छे. एवो एकाग्रतारुप जे ध्यान, तेने अपायविचय धर्मध्यान कहे छे.

३ विपाकविचय–पूर्वोक्त विशेषण युक्त मारो जीव छे, पण अनादिकालथी कर्मनो संबंध आत्मानी साथे लोलीभूतपणे छे, तेथी जीव अनंता दुःख भोगवे छे. कर्मवशे जीव दुःखी छे. कर्मनो विपाक चिंतवे जे–जीवनो ज्ञानगुण ते ज्ञानावरणीय कर्मे दाब्यो छे, जीवनो दर्शन गुण ते दर्शनावरणीय कर्म दाब्यो छे, अव्याबाध गुण ते वेदनी कर्मे रोक्यो छे, क्षायिक गुण ते मोहनीय कर्मे रोक्यो छे, अक्षयस्थितिरुप जे गुण ते आयुष्य कर्मे दाब्यो छे. जीवनो अरुपी गुण ते नामकर्मे दाब्यो छे, अगुरु लघु गुण ते गोत्र कर्मे दाब्यो

अने अनंत वीर्य गुण ते अंतराय कर्म रोक्यो छे. एम आत्माना आठ गुण ते आठ कर्मे रोक्या छे. आ संसारमां ममता थकी जे जीवने सुख दुःख थाय छे ते कर्मथी थाय छे. माटे पौद्गलिक सुख उत्पन्न थये छते खुशी थवु नहि, दुःख आवे छते शोक करवो नहीं. कर्म स्वरुपनी प्रकृति, स्थिति, रस, अने प्रदेशनो बंध, उदय उदीरणा, तथा सत्ता चितववानो जे एकाग्रतारुप परिणाम, तेने विपाकविचय धर्म्यध्यान कहे छे

४ संस्थानविचय—चौद राजलोकनो स्वरुप आ प्रमाणे विचारे. आ लोक चउद राज प्रमाण उंचो छे, ते मध्ये सातराज अधोलोक छे, वच्चमां अढारसो योजन मनुष्य क्षेत्र तिर्छो लोक छे, ते उपर कइंक उंचु

सातराज ऊर्ध्वलोक छे, तेमा सर्व वैमानिक देवता वसे छे, अने ते उपर सिद्धशिला छे, तेना उपर एक योजनना चोवीस भाग करीए तेमाना त्रेवीस भाग नीचे मूकी उपरना चोवीसमा भागे सिद्धक्षेत्र छे, ए रीते लोकनु प्रमाण छे. ए लोकनु संस्थान वैशाख छे. अनंतकाळ पर्यंत जीवे संसारमां भमता सर्व लोकने जन्ममरणवडे स्पर्श्यो छे, पण जे लोकनुं स्वरप चितववुं तथा लोकमां रहेला धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि, पंचास्तिकायनु अवस्थान तथा परिणमन तथा द्रव्यमध्ये गुणपर्यायनु अवस्थान तथा द्रव्य मध्ये रहेला उत्पाद, व्यय अने ध्रुवनु सद्रूपणु तेनुं जे एकाग्रताए तन्मय चिंतवन परिणाम, तेने संस्थान विचय धर्मध्यान कहे छे.

आ आरामा (काळमा) भव्य प्राणी योने धर्मध्याननो आधार विशेष छे. माटे तने विषे तत्पर थवु ते सुखकारी छे, धर्मध्यान चोथा गुणठाणाथी माडीने सातमा गुणठाणा सुधी होय छे.

४ शुक्लध्यान.

शुक्ल करेता निर्मळ शुद्ध परआलम्बन विना आत्माना स्वरूपने तन्मयपणे ध्यावबु तेने शुक्लध्यान कहे छे तेना पाया ४ चार छे

१ पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार (२) एकत्व वितर्क अप्रविचार (३) सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति (४) उच्छिन्न क्रिया निवृत्ति ए चार शुक्लध्यानना पाया छे.

१ पृथक्त्व वितर्क समविचार–पृथक्त्व एटले तीर्थथी अजीव जुदा करवा. स्वभाव तथा विभावनी जुदी पृथक्पणे वर्हंचण करवी स्वरुपने विषे द्रव्य तथा पर्यायनो पृथ क्त्व एटले जुदापणे ध्यान करी पर्याय ते गुणमा संक्रमावे, अने गुण ते पर्यायमा संक्रमावे, ए रीते स्वधर्मने विषे धर्मांतर भेद ते पृथक्त्व कहीए, अने तेनो वितर्क ते जे श्रुतज्ञाने स्थित उपयोग, अने समविचार ते सविकल्प उपयोग. एटले एक चिंतव्या पछी बीजो चिंतववो, तेने समविचार कहीए. एने निर्मल विकल्प रहित पोतानी सत्ताने ध्यावे, ते पृथक्त्व वितर्क समविचार नामनो पहेलो पायो जाणवो. ए पहेलो पायो आठमाथी अगीयारमा गुणठाणा सुधी

होय छे

१ एकत्ववितर्क अप्रविचार-जे जीव आपणा आत्माना गुण पर्यायनी एकता करी ध्यावे, ते आवी रीते के-जीवना गुण-पर्याय अने जीव ते एकज छे, मारो जीव सिद्ध स्वरप एकज छे. एवो एकत्व स्वरप तन्मयपणे अनंता आत्मधर्मनो एकत्वपणे ध्यान-वितर्क कहेता श्रुतज्ञानालंबीपणे अने अप्रविचार कहेता विकल्प रहित दर्शन-ज्ञाननी समयांतरे कारणता विना रत्नत्रयी नो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान, वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ते एकत्व-वितर्क अप्रविचार जाणवो. ए बीजो पायो बारमा गुणठाणे ध्यावे. ए बेउ पायामां श्रुतज्ञानालंबीपणो छे, पण अवधि मनःपर्यव

ज्ञानोपयोगे वर्त्ततो जीव कोइ ध्यान करी शके नहि कारण के ए ने ज्ञान परानुयायी छे माटे ए ध्यानथी घनघातीया चार कर्म खपावे, निर्मल केवलज्ञान पामे, पछी तेरमे गुणठाणे ध्यानतरीए रहे. तेरमाने अंते अने चउदमे गुणठाणे नीचे प्रमाणे बे ध्याया ध्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति–सूक्ष्म मन वचन कायाना योगरुधे, शैलशी करण करी अयोगी थाय, अप्रतिपाति निर्मल वीर्य अचलतारूप परिणाम ते सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति ध्यान जाणवुं. इहा सत्ताए ८५ प्रकृति रही हती, तेमाथी ७२ खपावे.

४ उच्छिन्न क्रियानिवृत्ति–जे योगरुं

घन कीधा पछी शेष तेर प्रकृति खपावे, अ-पर्मी थाय, सर्व क्रियाथी रहित थाय ते ॥ च्छिन्न क्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान जाणवुं ए ध्यान ध्यावता शेष कर्म प्रकृतिनुं खरण रुप क्रिया उच्छेदे. अवगाहना देहमानमांथी त्रीजा भाग घटाडे, शरीरनो त्याग करी अहींथी सातराज उपर लोकने अंते जइ सिद्ध थाय.

हवे बीजा चार ध्यान कहे छे. (१) पदस्थ (२) पिंडस्थ (३) रूपस्थ (४) रूपातीत.

१ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए पंचपरमेष्ठीना गुणने संभार तेनु हृदयमा ध्यान करे ते पदस्थ ध्यान जाणवु.

२ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव तेमां अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, अने साधुपणाना सर्व गुण छे एहवु जे ध्यान ते पिंडस्थ ध्यानकहीए. अथवा गुणीना गुण मध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान जाणवुं.

३ शरीरकर्मादि रूपमां रह्यो थको पण मारो आत्मा अरूपी अनंतगुणी छे, शरीरमा रहेला आत्मामा ध्यान वडे तल्लीन थवु. ब्रह्मरन्ध्रादि स्थानोमा ध्यान धरवु, तेने रुपस्थध्यान कहे छे. ए त्रण ध्यान धर्म ध्यानमां गणवा.

४ रूपातीत–निराकार, निःसंगी, निर्मल, संकल्प विकल्प रहित, अभेद, एक, शुद्ध, सत्तारुप, चिदानन्द, असङ्ग, अखंड,

अनंतगुण पर्याय रूप आत्मस्वरूपनुं ध्यान, ते रुपातीत ध्यान जाणवुं अहींया मार्गणा, गुणठाणा, नय, प्रमाण, मति आदिक ज्ञान, क्षयोपशमभाव, सर्व त्याग करवा योग्य छे ए रुपातीत ध्यान कयुं विशेष चार ध्याननुं स्वरुप योगशास्त्र आदिथी जाणवुं.

त्रीजुं धर्म ध्यान तेनी चार भावना कहे छे.

चार भावना

(१) मैत्री भावना (२) प्रमोद भावना (३) कारुण्य भावना (४) माध्यस्थ भावना.

मैत्री भावना

सर्व जीव साथे मित्रता चिंतववी. को

जीव मारो दुश्मन नथी. सर्वे जीवना आत्मा सिद्ध समान सत्ताए छे, अने कर्मना वशथी ससारमा सुखी दुःखी देखाय छे, ते सर्वे जीव मारा सजातीय भाइ छे. एकेन्द्रियादिथी पञ्चेन्द्रिय सर्वे जीव सजातीय छे, ते मारा साधन छे, मित्र छे. तो तेमना उपर मारे द्वेष करवो न जोइए. तेमनु भलुं चिन्तवधु. मारु न्वरान करवाने कोइ समर्थ नथी. कर्म-नोज ए प्रपच छे, कर्म ए जड वस्तु छे, अचेतन छे, रूपी छे, कर्म वस्तु विजातीय छे, ए थकी मारे दूर रहेवु जोइए, अने एना प्रपचमा फसावु मारे योग्य नथी. अनादिकालथी कर्म जड वस्तु मने चार गतिमा भटकावे छे, अने मारु पोतानु स्वरूप ओळखवा देतुं नथी, जेम दारु मारा

माणसने पण बेभान बनावी दे छे अने तेना गुणनो नाश करे छे, तेम कर्म मारा गुणनो नाश कर्यो छे.

जेम कोई पांच मित्रो हळीमळीने दररोज एकठा रहे छे, अने एक बीजा साथे सारी रीते मित्रता राखे छे परस्पर भक्त नाछे छे एक दिवसे पांच मित्रोए दारु पीधो, ते दारुनी नीशा गरम थयी, त्यारे ते परस्पर गाळो देवा लाग्या, अने एक बीजाने मारवा लाग्या, तेमा ए सर्व प्रपंच नु कारण दारु छे. हवे ज्यारे ए दारुनो नीशो उतरी गयो त्यारे ते एक बीजा साथे हळीमळीने वातो करवा लाग्या अनेमिम पणे वर्तवा लाग्या. तेम कर्मरुपी दारुना जुस्साथी सर्व जीवो एक बीजाने शत्रु-दु-

दमन, भाइ बेन, वगेरे प्रपच तरीके माने छे, पण तेमा जीवोनो काइ वाक नथी. ए सर्वनुं कारण कर्म छे कर्मवडे जीव बीजा जीवने दुश्मन तरीके धारे छे, पण तेमां कोइ जीव कोइनो दुश्मन नथी, कर्म थकी रहीत थएला सिद्ध महाराजनु कोइ खराब करवा समर्थ नथी, तेम हुं पण ज्यारे कर्म रहित थइश, त्यारे कोइ मारु खराब करी शकवा समर्थ नथी, कर्म तेज दुःखकारी छे.

कुतराने कोइ माणस कांकरो मारे तो ते कांकराने करडवा दोडे छे. सिंहने कोइ माणस गोळी मारे तो ते गोळी तरफ नहि जतां ए गोळी कोणे मारी एम लक्षी मारनार सामो दोडे छे. तेम केटलाक प्राणी कुतरा

कोइ जीव उपर द्वेषभाव करवा नथी.

मारा आत्माने जेम कर्म लाग्या छे, तेम बीजा जीवोने पण कर्म लाग्या छे पण आ-त्माओ तो सर्वनां सरखा छे मारो आत्मा अरूपी अनन्तज्ञान, अनन्त दर्शन अने अनन्त चारित्रनो भोक्ता छे. सर्व जीवो गुणोवडे एक सरखा छीए सजातीय छीए माटे सर्व जीवो मारा मित्र छे, एवी भावनाने मैत्री भावना कहे छे, सर्व जीव उपर हितबुद्धि राखवी तेने मैत्री भावना कहे छे

२ बीजी प्रमोद भावना कहे छे गुण वन्त अने ज्ञानादिक उपर राग तेने प्रमोद भावना कहे छे. धर्म करता जीवोने देखी खुशी थवु, ज्ञानवन्त वैरागी मुनियोने देखी हर्ष धरवो तथा दश द्रष्टान्ते दोहीले

मनुष्य जन्म पामीने श्रावक कुलमा अवतार आदि धर्मनी जोगवाइ पामी हर्ष करवो, तेने प्रमोद भावना कहे छे.

३ धर्मवंत उपर राग नहीं अने मिथ्यात्वी उपर द्वेष पण नहीं तेने माध्यस्थ भावना कहे छे हिंसक जीव उपर पण उत्तम जीवने करुणा उपजे. उपदेश देवा थकी जो सारा मार्गे आवे तो तेने शुद्ध मार्गे आणवो कदाचित् मार्गे न आवे तो पण द्वेष न करवो कमके ते अज्ञाण छे एम जाणवुं. ए माध्यस्थ भावना.

४ सर्व जीवने पोताना तुल्य जाणी दया पाळे, कोइने हणे नहीं, तथा जे दुःखी होय, धर्महीन होय, तेना उपर करुणा लावे, अने तेनु भलु करवा चाहे, तथा धर्महीन

मनुष्य देखीने एम इच्छे के आ मनुष्य क्यारे धर्म पामशे ? यथार्थ आत्मतत्त्वना स्वरूप एमने क्यारे अवलंबशे ? एवो जे परिणाम तेने चोथी कारुण्य भावना कहे छे.

बार भावना

अनित्य भावना.

१ कुटुंब, धन, पुत्र अने परिवारादि सर्व विनाशी छे. प्रत्यक्ष देखाय छे ते शरीर पण एक दिवस नाश पामशे, जीवनो मूल-धर्म अविनाशी छे, जे जे नजरे देखवामां आवे छे ते सर्वनो नाश थायछे एम विचारवु ते पहेली अनित्यभावना.

अशरणभावना

२ संसारमां जीवने मरण समये शरण राखवा कोइ समर्थ नथी. माता, पिता, भाइ, बेन अने पुत्रादिना जोतां शरीर मूकी जीव परलोक प्रयाण करे छे, ते कोइनाथी रखातो नथी. राजा होय वा रंक होय, कीडो होय वा इंद्र होय, तो पण मृत्यु कोइने मूकतु नथी. चार गतिना जीवोने मरण थकी रक्षण करी शरण राखवा कोइ समर्थ नथी, एम विचारवु ते बीजी अशरणभावना जाणवी.

संसारभावना.

३ कर्मना योगे जीव चारगतिरूप संसारमां अनादिकालथी जन्म मरण करे छे,

अने असह्य दुःख भोगवे छे. संसार बळता अग्नि (दावानळ) समान छे. उत्तम पुरुषो ए चारित्र ग्रहण करी संसारनो त्याग कर्यो छे. अरे हुं महा पापी संसारमां राच्यो माच्यो छुं हुं हवे दुःखमय संसारथी क्यारे छूटीश ? आ प्रमाणे विचारणा ते संसारभा वना जाणवी.

एकत्व भावना

४ जीव एकलो आव्यो छे, अने अहींथी एकलो बीजी गतिमां जाय छे धन धान्यादिक परिग्रह, पुत्र, अने कलत्र, वगे साथे आवनारु नथी. कुटुंबनु पेट भरव मारु हिंसा, असत्य, चोरी-इत्यादि कपटथ हुं लक्ष्मी पेदा करु छु, पण तेथी थएल पापमांथी कोइ भाग लेनार नथी क

रेल कर्म मारे एकलाने भोगववुं पडशे. सगा वहाला, वहालीस्त्री, पुत्र अने दीकरीओने जन्मती वखते साथे लाव्यो नहोतो. पूर्व भ-वना संबंधथी मारे तेमनो मेळाप थयो छे, पण अंते सर्व मूकी मारे एकलुं जवु पडशे. जे जे प्रमाणे अहीं हुं धर्म वा अधर्म करुं छु, ते ते प्रमाणे परभवमां सुख दुःख पा-मीश. परने मारु मानी हुं मलकाउं छु, पण वस्तुतः कोइ मारुं नथी. सवधे करी सर्व भेगु थयु छे, ते सर्वनो एक दिवस वियोग थाय छे. चोराशीलाख जीवायोनीमा भमता दश दृष्टाते दोहीलो मनुष्य जन्म पामी, हे चेतन !!! हवे केम प्रमाद कर छे आखो दिवस घाचीनी घाणीना बळदनी पेठे पापकाममा लागी रह्यो छे, पण जाणतो नथी के मूढ ! अंते अनंतु

दुःख भोगववुं पडशे. देखाता शरीरनो पण अंते स्वाभव थई जवानो छे काया माटीमां माटीरूप थई जशे. आ वखते जेवी धर्मनी सामग्री मळी छे, तेवी वारवार मळनार नथी. माटे हे चेतन ! ! चेत ! चेत ! माथे काळ झपाटा देत. तुं क्यांथी आव्यो, क्यां जाईश, तुं कोण छे, तारं कोण छे, एनो विचार कर. राम, रावण, पांडव, कौरव अने लक्ष्मण जेवा वीरपुरुषो एकाकी गया, तो तुं केम मोहराजानी सेनमां उंघे छे ? जाग ! जाग ! एकत्वपणुं धार इत्यादि विचारणा ते एकत्व भावना जाणवी.

अन्यत्वभावना

५ आ संसारमां कोइ कोइनुं नथी. सौ

स्वार्थनुं सगु छे. ज्यारे आपणाथी बीजानो स्वार्थ सरतो नथी. त्यारे अन्योनु आपणा उपरथी हेत उतरी जाय छे हे चेतन ! तारी नजरे जे जे पदार्थो देखाय छे,, ते ताराथी जुदा छे, अने तु तेनाथी जुदो छे. माता, पिता, भाइ, बेन, स्त्री, पुत्र अने धन ए सर्व हे जीव ताराथी जुदां छे. दृश्य शरीर छे ते पण हे चेतन ! ताराथी जुदु छे, लेश्या, योग, पाच सस्थान, पाच शरीर, तथा पाच संघयण, दस प्राण, अने पाच इन्द्रियो. ए सर्व हे चेतन ! ताराथी जुदु छे तेनामां पोतापणु मानीश नहीं. एम विचारवु ते अन्यत्व भावना जाणवी.

अशुचिभावना.

६ शरीर अपवित्र मळ मूत्रनी खाण छे.

अशुचिमय छे, पुरुषना नव अने स्त्रीना बार द्वारथी सदा अशुचि नीकळे छे, हाल शरीर पवित्र लागे छे, पण रोग थए छते दुर्गंधी युक्त थइ जाय छे, मांस, रुधिर, मेद अने हाडका वगेरथी शरीर रच्यु छे, तेने देखी हे चेतन ! तु शु राचे छे गर्भवासे कीडानी पेठे नवमास मळमा रह्यो, सूर्यनो प्रकाश आवे नहीं, अने उंधे मस्तके रहेवु, एहवा गर्भना दुःख चेतन शु तु विसरी गयो ? अशुचिमय काया देखी मोह पामी शु राचे छे ? एम विचारवु ते छट्टी अशुचिभावना.

आस्त्रवभावना

७ मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अने योगथकी जीव आस्त्रवनु ग्रहण करे छे. शुभाशुभ कर्मना दळीयां आववानो जे रस्तो तेने आस्त्रव कहे छे. शुभ दळी

याने पुण्य कहे छे, अने आत्मानी साथे लागेला जे कर्मना अशुभ दळीयां तेने पाप कहे छे. हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन अने परिग्रह रूप आस्रवथी कर्मनो बंध थाय छे. राची माचीने पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय सेववाथकी आस्रवनो बंध थाय छे. प्रमादना वशथकी, तेमज मन वचन कायाना दुःप्रणिधानथी तेमज क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, दुगंछा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुंसकवेद, ए आदिथी आस्रव थाय छे. जीव अनादि काळथी आस्रवना योगे चार गतिमां भम्या करे छे, अने तेथी अनेक प्रकारना दुःख पामे छे. ए आस्रव महा दुःखदायी छे, आत्मानुं अहित

ारक आस्रव छे माटे तेनाथी हे चेतन ! दु
र रह, एम विचारवु ते आस्रवभावना. आ-
स्रवनो संबध अभवी जीवने अनादि अनंत
छे अने भवी जीवने अनादि सान छे.

७ संवरभावना

आस्रवनो जेनाथी रोध थाय तेने संवर कहे छे जीव भावना भावे के-इर्या समिति, भाषासमिति, एषणासमिति इत्यादि पांच समिति अने त्रणगुप्ति शुद्ध क्यारे पाळीश, अने बावीस परिसहने समभावे क्यारे सहीश चेतन ! विषयाभिलाषाथी मन पाछु वाळ. क्षात्यादि दशविध यतिधर्म शुद्ध पाळवा उद्यम कर के जेथी आत्महित थाय यतिधर्म भवोभवना दुःख टाळनार छे, अने पचमी गति जे मोक्ष तेने आपनार छे. धन्य

छे ते मुनिवरने के जे मान अने अपमानने चित्तमां सम गणे छे, सोनु अने पाषाण चित्तमां समगणे छे, शत्रु मित्र उपर समदृष्टि राखे छे. पांच प्रकारना चारित्र हे जीव तने क्यारे प्राप्त थशे. क्यारे एकाकी अप्रतिबद्ध विहार करीश हे चेतन कोइपण जीव साथे वैर विरोध करीश नहीं कारण के तेथी भवोभव दुःख पामीश. कपट कर नहीं. विश्वासघाती थाइश नहीं. संसाररूप समुद्रमा बुडाडनार नव प्रकारनो परिग्रह छे, तेनो त्याग कर. मूर्छा-ममता राखवाथी जन्म मरण करवा पडे छे, तो साक्षात् नवविध परिग्रह केवा केवा दुःख पमाडशे तेनो विचार करी परिग्रहनो त्याग कर. विषयने विष (झेर) सरखो जाण. एकेक इंद्रियना

मुनि, ढंढणकुमार अने गजसुकुमाल जेवा मु
नीश्वरोने धन्य छे के जेओए उग्र तपश्चर्या
करी छे. हुं पण ज्यारे तेवी रीते तपश्चर्या
करीश, त्यारे धन्य दिवस मानीश इत्यादि
विचारणा ते निर्जरा भावना जाणवी.

१० लोकस्वरूप भावना

चउदराजलोकनुं स्वरूप विचार
ते लोक स्वरूप भावना जाणवी. एनुं स्व
रूप पूर्वे लखवामां आव्युं छे तेथी अ
नथी लख्युं

११ बोधिदुर्लभभावना

संसारमा ममता जीवने समकित
प्राप्ति थवी दुर्लभ छे. समकित पाम्या छ
चारित्र ग्रहण करवुं दुर्लभ छे.

त्यादि विचारणा ते बोधिदुर्लभ भावना जाणवी.

१२ धर्मना कथक सद्गुरुनी दुर्लभता.

धर्मना कथन करनार सद्गुरु तथा जिनेश्वर भगवाननी स्याद्वादमय वाणी सांभळवानी सामग्री पामवी दुर्लभ छे, धर्मगुरुनी प्राप्ति दुर्लभ छे. ते आश्री धर्मदुर्लभ भावना जाणवी

ए चार भावनानो विस्तार, अत्र ग्रंथ गौरवना भयथी कर्यो नथी. विशेष अधिकार बीजा ग्रंथोथकी जाणवो. मनुष्य जन्म पामी आलस्य, विषय, कषाय अने परभावमां जो आयुष्य गाळीश तो हे चेतन ! ! दुर्गतिमां जाइश आत्मस्वरुप

समकित सहित ज्ञान, दर्शन, चारित्र ते मोक्षनु कारण छे ज्ञान सहित चारित्र न ग्रहण थइ शके तो पण श्रेणिक राजानी पेठे सद्दहणा शुद्ध राखवी. जो समकित शुद्ध छे तो मोक्ष आसन्न छे कयु छे के

दंसण भठ्ठोभठ्ठो, दसणभठ्ठोइनथ्थि निव्वाण, सिज्झति चरण रहिया, दसण रहिया न सिज्झति ॥ १ ॥

वळी आगममा कयु छे क जसक्क इतकी रइ, अहवा नसकई तयमिसद्दहणा, सद्दहमाणो जीवो, वच्चइ अयरा-मरठाणं ॥

अर्थ—रे जीव तु करी शके तो कर अने जो न करी शके तोपण जेवो वीतराग भगवंते स्याद्वादरूप उपदेश्यो छे, ते प्रमाणे [redacted]

दयमां शुद्ध श्रद्धा राख. श्रद्धा धरनार अनुक्रमे मोक्षस्थानक पामे छे. **जीवाजीवा पुण्ण, पावासवसंवरो य निज्झरणा, बंधो मुक्खो य तहा, नव तत्ताहुति नायव्वा**—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष, ए नवतत्त्व जाणवा योग्य छे.

हेया बंधासव पुण्ण पावा जीवाजीवाय हुति विन्नेया, संवर निज्झर मुखो तिन्निवि ए उवादेया ॥ १ ॥ बंध, आस्रव, पुण्य अने पाप ए चार तत्त्व त्याग करवा योग्य छे. जीव अने अजीव तत्त्व जाणवा योग्य छे संवर,

त्माने जाणी उपादेय करी ध्यावे तेने सम कित जाणवू.

चउदराज लोकनो खय लोकाकाश सा दिसात छे. ते आवी रीते के लोकना मध्य भागे आठ रुचक प्रदेशथी मांडीने सादि छे. अने चउदराज लोकनो अत आवे त्यां सात तथा एक चउदराज लोकनो छल्लो प्रदेश मु कीने पछे अलोकनी आदि लेवी, पण अ लोकनो अत नथी. माटे सादि अनन्त कयो छे.

छ द्रव्यना यथार्थ ज्ञानपूर्वक पाच द्रव्य नो त्याग परिणाम अने जीव द्रव्य आदरवानो परिणाम तेने समकित नाम कहे छे ते सम कित ज्ञानथी भद्धज थाय छे कह्यु छे के-

न्मि गिंदियच्चे अगिंदियवत्थे इन्द

अच्छमि जडयमेउजो सोउपणसो तओनाम.
भावार्थ–ज्ञानथी जे द्रव्य जाणीने आदरवा योग्य होय ते आदरे, अने त्यागवा योग्य त्याग करे एवो जे उपदेश ते नय उपदेश जाणवो.

हवे समकितनी दशरुचि कहे छे

१ निसर्गरुचि–ते निश्चयनये जीवादि नवतत्त्व जाणे, आस्रवने त्यागे अने संवरने सेवे, वीतरागना कहेला छ द्रव्यने द्रव्य, क्षेत्र, काळ, अने भावथी जाणे, नामादि चार निक्षेपा जिनाज्ञा पूर्वक पोतानी बुद्धिथी जाणे सद्दहे. वीतरागे कहेला भाव सत्य छे, एम जाणवुं ते सम्यक्त्व छे.

उपदेशरुचि–नवतत्त्व तथा छ द्रव्यने गुरु उपदेशथी जाणीने सद्दहे ते

आज्ञारुचि–वीतराग भगवंते कहे-

णी आज्ञानुं मान्यपणुं तेने आज्ञारुचि कहे छे

४ सूत्ररुचि–वर्तमानकालमां विद्यमान, जिनभाषित आगमादि सूत्र, तथा निर्युक्ती, भाष्य, चूर्णि, टीका ए पंचांगीना पठन माने ते जीव सूत्ररुचिवंत कहेवाय छे. आगम भणवानी तथा सांभळवानी घणी चाहना होय ते सूत्ररुचि जाणवी

५ बीजरुचि–गुरुमुखथी एक पदनो अर्थ सांभळीने अनेक पद समजे ते बीजरुचि.

६ अभिगमरुचि–सूत्र-सिद्धांत अर्थ सहित जाणवानी इच्छाने अने अर्थ विचार सांभळवानी घणी चाहनाने अभिगमरुचि कहे छे.

७ विस्ताररुचि–षड्द्रव्यना गुणपर्या-

यने चार प्रमाण तथा सातनये विस्तारथी जाणराने रुचिने विस्ताररुचि कहे छे.

८ क्रियारुचि–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय, वैयावच्च, समिति, गुप्ति, चरण सित्तरी अने करण सित्तरी सहित, आत्म-धर्म साधे जे रुचि तेने क्रियारुचि कहे छे.

९ संक्षेपरुचि–अर्थज्ञान थोडुं कहे छते पणुं गाणीने कुमतिमां पडे नहीं, ते संक्षेप-रुचि जाणवी.

१० धर्मरुचि–पांच अस्तिकायनुं स्व-रूप जाणराने तथा श्रुतज्ञाननो स्वभाव अंतरंग साचा सद्दहवाने रुचिने धर्मरुचि कहे छे. समकितना सडसठ बोल जाणी आदरे, ते जीव समकिती कहेवाय छे. हे भव्यो ! पूर्वे पुण्ययोगे मनुष्य जन्म पाम्या

छो, माटे शुद्धदेव, शुद्धगुरु, अने शुद्धधर्म तेने आदरो. सामायक-पूजा, प्रभावना, पडिक्कमण, पोसह, श्रावकनां बारव्रत, साधु ना पंचमहाव्रत, तीर्थयात्रा, सद्गुरुवाणी जीर्णोद्धार अने शुद्धक्रियानो स्वप धर्मकर णीने हृदयमा धारण करो के जेथी अनुक्रमे शिवसुख पामो

समकितनु स्वरूप

॥ तत्त्वार्थश्रद्धानसम्यग्दर्शनम् ॥

(तत्त्वार्थसूत्र)

देवत्वधीर्जिनेष्वेव, मुमुक्षुषुगुरुत्वध
धर्मधीराहंताधर्मे, तत्स्यात्सम्यक्त्व
॥ १ ॥ (उपदेशप्रासाद)

भावार्थ-राग द्वेषने जीतनारा जिन कहेवाय छे. नामजिन, स्थापनाजिन, द्रव्य जिन, अने भावजिन एम चार प्रकारे जिन छे, ते जिनेश्वरोमाज देवबुद्धि राखवी, तथा भव (संसार) थकी पोताना आत्माने मुक्त करवाने इच्छनार जे मुमुक्षु पुरुषो तेमांज गुरुपणानी बुद्धि राखवी, तेमज दुर्गतिमा पडता जीवोने धारण करनार जिनेश्वर प्रणीत धर्ममा धर्मपणानी श्रद्धा राखवी तेने सम्यग्दर्शन कहे छे ते सम्यक्त्व स्वभावथी अथवा गुरुना उपदेशथी एम बे प्रकारे प्राप्त थाय छे.

स्वभावथी एटले गुरु विगेरेना उपदेश नी अपेक्षा रहित स्वभावथी (क्षयोपशमथी)

न्यून एवा एक कोटाकोटि सागरोपमनी स्थितिवाळा करे छे. अहींया जीव घर्षणी उत्पन्न थएल अपन निबिड रागद्वेषना परिणामरूप कर्कश अने दुर्भेद्य एवी ग्रंथि सुधी आवे छे. आ ग्रंथिदेशसुधी तो अभव्यजीवो चारित्र ग्रहीने पण संख्याती वा असंख्यातीवार आवे छे. आ यथाप्रवृत्तिकरणनो काळ अंतर्मुहूर्तनो जाणवो.

अनाद्यनन्तसंसाराऽऽवर्त्तवर्त्तिपुदेहिपु । ज्ञानदृश्यावृत्तिवेद-नीयान्तरायकर्मणाम् ॥ १ ॥ सागरोपम कोटीनां,कोटय स्त्रिंशत्परास्थिति

सप्ततिः ॥ २ ॥ ततोगिरिसरिद्ग्राव घोलनान्यायत. स्वयम् । एकाब्धिकोटिकोटयूना, प्रत्येकक्षीयते स्थितिः ॥ ३ ॥ शेषाब्धिकोटिकोटयन्तः स्थितौसकलजन्मिन. यथा प्रवृत्तिकरणाद्ग्रन्थिदेशसमियंति ॥४॥ रागद्वेषपरीणामो दुर्भेदोग्रन्थिरुच्यते। दुरुच्छेदोदृढतरः काष्ठादेरिवसर्वथा ॥५॥ ग्रन्थिदेशतुसम्प्राप्ता रागादिप्रेरिताः पुनः । उत्कृष्टबन्धयोग्याः स्यु श्चतुर्गतिजुषोऽपिच ॥ ६ ॥

(२) अपूर्वकरण—पूर्वे [illegible] एवत

नहि प्राप्त थएला एवा आत्माना परिणाम थाय छे ते परिणामवडे रागद्वेषनी जे गाठ छे के जे समकित पामवामां अंतरायभूत छे ते गाठने छेदी शकाय छे. अहींया भव्य-जीव रसघात-स्थितिघात-गुणश्रेणि अने अपूर्वबंध ए चार बाबतो करे छे तथा अनंतानुबंधी कषायना जे दलीयाओ उदय आव्या छे तेने क्षय करे छे अने जे हवे पछी थोडा वखतमां उदय आववाना छे, तेनी उदीरणा करीने उदयमां लावी उपशमावे छे क्षय करे छे. आ अपूर्वकरणनो काळ अंतर्मुहुर्तनो जाणवो.

नेपामध्येतुयेभव्या भाविभद्रा श

आविष्कृत्यपरवीर्य अपूर्व

करणेकृते ॥७॥ अतिक्रामन्तिसहसा तंग्रन्थिदुरातिक्रमम् । अतिक्रान्तम-हाध्वानो घट्टभूमिमिवाध्वगाः ॥८॥

(३) अनिवृत्तिकरण—जे करण थयाने वीर्यशक्ति प्राप्त थया बाद जेनी निवृत्ति थती नथी अर्थात् सम्यक्त्व प्राप्त थया विना जेनी निवृत्ति थती नथी. तेने अनिवृत्ति करण कहे छे आ करणनो केटलोक काल गये थके अने एक भाग बाकी रहे थके मोटी जे स्थिति तेना बे विभाग करे छे. एक नानी स्थिति अने बीजी मोटी स्थिति. नानी स्थितिने आ करणमां भोगवी क्षय करे छे अने मोटी स्थितिमांथी जे दळीयाओ थोडा

समय पछी उदय आववाना छे, तेनी उदीरणा करी उदयमा न्यारी (एटले नानी जे स्थिति छे तेनी अंदर मेळवी भोगवी क्षय करे छे) आनी उदीरणा बे आवलीका वाकी रहे थके टळी जाय छे. अहींया मिथ्यात्वना केटला एक दलीयाओ क्षय थइ जाय छे. अहींया पण जीव, रसघात-स्थितिघात, गुणश्रेणि अने अपूर्वबंध ए चारने करे छे. अहींया जीव, अंतरकरण करे छे शेप एक आवलीका बाकी रहे थके त्रण पुंज करे छे. मिथ्यात्वना चौठाणीया रसवाळा दलीयाओ छे तेमाना केटलाएकने उच्चपरिणामवडे एकठाणीया करे छे अने केटलाएकने बे ठाणीया अने त्रण ठाणीया रसवाळा करे छे. केटलाएक तेवा चौठाणीया रसवाळा दलीया

रे छे. एटले ते रसने सत्तामांने सत्तामां हीन करे छे. त्रण पुंज थया पछी जीव उप-शम समकित पामे छे आ करणनो अने उपशम समकितनो काळ अंतर्मुहूर्त्तनो छे. त्रण करणने माते जीव उपशम समकित पामे छे उपशम समकितनो काळ पूर्ण थया पछी जो एकठाणीया रसनो उदय थाय तो तेनु नाम समकित मोहनीय जाणवुं. ते वडे क्षयो पशम समकित प्राप्त थाय छे ने अथवा त्रण ठाणीया रसनो उदय थाय तो मिश्रमोहनीय जाणवी. ते वडे मिश्रसमकित पामे छे, तेनाथी जीवने धर्ममा उदासीन वृत्ति थाय छे अने चौठाणीया रसनो उदय थाय तो मि-थ्यात्व मोहनीय जाणवी. ते वडे जीव मिथ्या-त्वने पामे छे. कर्मग्रंथना मते संसारचक्रमा

प्रथम उपशम समकित प्राप्त थाय छे अने मि
ध्यातना मते प्रथम क्षयोपशम समकित प्राप्त
थाय छे.

॥ अथानिवृत्तिकरणादन्तरकरणेकृते
मिथ्यात्वविरलकृर्युवेदनीयपदमत
॥९॥ आन्तर्मुहूर्त्तिकसम्यग्–दर्शन
प्राप्नुवन्तियत्, निसर्गहेतुकमिद
सम्यक्श्रद्धानमुच्यते ॥ १० ॥ गुरु
पदेशमालम्ब्य सर्वेषामपि देहिनाम्
यत्तत्सम्यग्श्रद्धान स्यादधिगमजं
परम् ॥ ११ ॥

उपशमसम्यक्त्व जीव ज्यारे अनंतानुबंधी

चोकडी तथा समकित मोहनीय, मिश्रमोहनीय, अने मिथ्यात्वमोहनीय ए सात प्रकृतिने उपशमावे छे (शान्त करे छे) त्यारे तेने उपशम सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे.

तच्चानादिमिथ्यादृष्टेः करणत्रयपूर्वकमान्तर्मुहूर्त्तिकं चतुर्गतिकस्याऽपि संज्ञिपर्याप्तपञ्चेन्द्रियस्य जन्तोर्ग्रन्थिभेदान्तरं भवतीत्युक्तप्रायम् ॥
उवसमसेढिगयस्सउ, होइउवसामियं तु सम्मत्तं। जोवाअकयतिपुंजो । अखविअमिच्छोलहइ सम्मं ॥

क्षयोपशमसम्यक्त्व–अनंतानुबंधीनी चा कडी, मिथ्यात्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने समकितमोहनीय ए सात प्रकृतिनो प्रदेशोदय अने समकित मोहनीयनो प्रदेशोदय अने रसोदय जेमां होय तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहे छे.

कम्मगयेसुधुव । पढसोवसमी करेइ तिपुजं लव्वडीओपुणगच्छइ सम्मे मिसमि मिच्छेवा ॥

उपशम सम्यक्त्वथी च्युत थनां जो जीव सम्यक्त्व मोहनीयने पामे छे तो तेने क्षयोप-शम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. कर्मग्रन्थना प्रमाणे एम जाणवु सिद्धांतना मत प्र । औपशमिक सम्यक्त्वथी च्युत अवश्य

मिथ्यात्वने पामे छे. उक्तं च कल्पभाष्ये–आलंबण मलहती, जहसठाण न मुंचए शलिआ, एवअकयति पुंजी । मिच्छंचिअउवसमीएइ ॥ मिच्छत्तजमुइन्न, तखीणअणुइअं-चउवसतं । मीसीभावपरियणं । वे इज्जत खओवसम ॥ तच्च सत्कर्मवेदकमप्युच्यते, औपशमिकं तुसत्कर्मवेदनारहितमित्योपशामिक-क्षायोपशमिकयोर्भेदः ॥

सास्वादन सम्यक्त्व–अनंतानुबंधी कषायना उदये उपशम समकित वमतां मिथ्यात्व गुणस्थानक पाम्या पहेला आतरे

ोहनीय चरम पुद्गल वेदनरूप एक साम
ायक वेदक सम्यक्त्व जाणवु

क्षायिकसम्यक्त्व—अनंतानुबंधीनी
ोकडी–मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय
अने समकित मोहनीय ए सात प्रकृतिनो बंध,
उदय, उदीरणा अने सत्तानो सर्वथा जेमां
क्षय थाय छे तेने क्षायिक सम्यक्त्व कहे छे.

पञ्चसम्यक्त्वानां कालनियममाह
ननु सप्तकक्षये क्षायिकमित्यु
क्तत्वात् सति क्षायिके श्रीकृष्णवा
सुदेवः कथं तृतीयनरकावनीं ज
गाम श्रेणिकश्च प्रथमामिति । उ
च्यते द्वेधा शुद्धमशुद्ध

चेति तत्र श्रीकृष्णश्रेणिकयोरशुद्धं क्षायिकं तस्य सादिसपर्यवसितत्वा दिति न विरोधः यदुक्त श्रीनवपद प्रकरणवृत्तौ ' तथाहि क्षायिकस्य शुद्धाशुद्धभेदेन द्विभेदत्वात् तत्रा-पायसद्व्यविकला भवस्थकेवलि-ना मुक्तानां च या सम्यग्दृष्टिस्त-च्छुद्ध क्षायिकं तस्य च साद्यपर्यव-सानत्वान्नास्त्येवभंगो यदाह ' ग-धहस्ती'भवस्थकेवलिनो द्विविधस्य सयोगायोगभेदस्य सिद्धस्य वा दर्शनमोहनीय सप्तकक्षयाविर्भूता

सम्यग्दृष्टिः सादिपर्यवसानेति भो
त्वपायसहचारिणी श्रेणिकादेति
सम्यग्दृष्टि तदशुद्ध क्षायिक
तस्य च सादिसपर्यवसानत्वादस्ति
प्रतिपातो यदुक्तं गंधहस्तिना तत्र
या च अपाय सद्रव्यवर्तिनी अपा
ये मतिज्ञानांश सद्रव्याणि शु
द्धसम्यक्त्वदलिकानि तद्वर्तिनी
श्रेणिकादीना च सद्रव्यापगमे
भवत्यपायसहचारिणी सा सादि
॥ चेति केवलज्ञानोत्प
अपायक्षये अपाय मतिज्ञानां

शः तत्क्षयेऽसौ भवति न प्रथमक-
षायोदये तत्काले तदुदयाभावात्
तत्क्षये एव तस्योपपत्तिरित्यल
प्रसङ्गेन इति शुद्धाशुद्धं क्षायिकं
द्विभेद.

श्रीकृष्ण श्रेणिक वगेरेने क्षायिक सम्यक्त्व
हतुं. तेमने चारित्रनी क्रियाओपर अत्यंत राग
होवाथी रोचक समकित पण कहेवाय छे.

खीणे दसणमोहे-तिविहंमि विभव-
निआणभूअंमि ।

निपच्चवायमउल-सम्मत्त ख

कारक सम्यक्त्व—तत्रकारक सू. त्राज्ञा शुद्धा क्रियेव, तस्या एव परगतसम्यक्त्वोत्पादकत्वेन सम्यक्त्वरूपत्वात् तदवच्छिन्नं वा सम्यक्त्वं कारकसम्यक्त्वं । एतच्च विशुद्धचारित्रिणामेव ॥१॥

सूत्राज्ञा शुद्धक्रिया तेज कारक सम्यक्त्व छे. ते क्रियानेज परगत सम्यक्त्वोत्पादकपणावडे सम्यक्त्वरूपत्व छे, ए हेतुथकी तदवच्छिन्नसम्यक्त्वने कारकसम्य कहे छे. विशुद्ध चारित्रवंतोने कारकस- १ होय छे

रोचक सम्यक्त्व—रोचयति स

म्यगनुष्ठानप्रवृत्तिं, नतु कारयतीति रोचकम्, अविरतसम्यग्दृशां कृष्णश्रेणिकादीनां ॥१॥

सम्यक् अनुष्ठाननी प्रवृत्तिनी रुचि करावे रण चारित्रनी प्रवृत्ति करावी शके नहिं तेने रोचक सम्यक्त्व कहे छे. देशविरत्यादि धर्मनी क्रियाओ रुचे पण ते करी शकाय नहिं, कृष्ण श्रेणिकादिकनी पेठे.

दीपक सम्यक्त्व—दीपकं व्यञ्जकमितरपनर्थान्तरम्, एतच्च य. स्वयं मिथ्यादृष्टिरपि धर्मेभ्यो जीवाजीवादिपदार्थान् यथावस्थितान् व्यनक्ति, तस्याङ्गारमर्दकादेर्दस्यम्॥१॥

दीपकने व्यंजक सम्यक्त्व कहे छे
पोते स्वय जे मिथ्यादृष्टि जीव होय, अं
अन्योने यथावस्थित जीवाजीवादि पदा
समजावे छे, तेने अगारमर्दकनी पेठे दीप
सम्यक्त्व होय छे.

द्रव्यसम्यक्त्व–तत्रजिनोक्तत
त्वेषु सामान्येन रुचिर्द्रव्यसम्यक्
त्वम्–त्या जिनोक्ततत्त्वोमा सामान्यथी
रुचि थाय छे तेने द्रव्यसम्यक्त्व कहे छे-
द्रव्यसम्यक्त्व ते भावसम्यक्त्वनुं
कारण छे. कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती
नथी, द्रव्यसम्यक्त्व विना भावसम्यक्त्वनी
यती नथी. नामसम्यक्त्व, स्था
... द्रव्यसम्यक्त्व अने

भावसम्यक्त्व ए चार निक्षेपथी सम्यक्त्व जणावेलुं-द्रव्यसम्यक्त्वनी प्राप्ति पछी भावसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. चार द्रव्यसम्यक्त्वना जे जे हेतुओ होय तेओनु अवलंबन करतां सर्व जीवोने साहाय्य आपवी, तथा सामान्यतः बेने सव्वाइ जिणेसरभासिआइं, वयणाइं नम्रहा हुंति इय बुद्धि जस्स मणे—सम्मत्त निच्चलं तस्स ॥ एवी श्रद्धा होय तेने द्रव्यसम्यक्त्व जाणवुं.

भावसम्यक्त्व—नयनिक्षेपप्रमाणादिभिरधिगमोपायो जीवाजीवादिसकलतत्त्वपरिशोधनरूपज्ञानात्म-

क भावसम्यकत्वम्–परीक्ष
तिज्ञानतृतीयांशस्वरूपस्येव
शास्त्रे व्यवस्थापितत्वात् ।
सिद्धसेनदिवाकरपादा' एव
मत्ते, सद्दहमाणस्स भावउ
पुरिसस्साभिणिवोहे-दंसणश
वइ वत्चो ॥

नय निक्षेप प्रमाणोवडे सर्वज्ञत
पायरुप जे बोध थाय छे,
दिसफलतत्त्व परिशोधनरूप जे
कये छे परीक्षा
त्रीजो अपायरुप जे भेद
रूपे व्यवस्थापवामा उ

नर्गनिर्श प्रमाणवडे पदार्थोना ज्ञान पूर्वक
सर्वज्ञ जिनभरवतत्वानी जे श्रद्धा थाय छे
तेने भावसम्यक्त्व कहे छे.

श्री हरिभद्रसूरि नीचे प्रमाणे कहे छे

जीवाइ नव पयत्थे; जो जाणइ
तस्स होइ सम्मत्त, भावेण सद्दहते;
अयाणमाणोवि सम्मत्त ॥ १ ॥ अ
हिह देवागुरुणो, सुसाहुणो जिणमय
पमाणत्र, इचाइ सुहो भावो,
सम्मत्त विति जगगुरुणो । जिणव
यणमेव तत्त इथ रुई होइ दव्व-
सम्मत्र । जइ भावणाण सद्धा,
पी सुद्ध भावसम्मत्त ॥

मेताकन तत्त तत्त है तत्त्वमेव

जिणेहिं पण्णत्त जिनेश्वर जे
तेज सत्य छे. एवी सामान्यरुचिने म्र
कहे छे. नयनिक्षेप प्रमाण परिच्छेद
रुचिनु भावसम्यक्त्व रूपे स्फुरायमा
वज्ञान श्रद्धा परिशुद्धने भावसम्यक्त
जे ज्ञानी नवतत्त्वोने नयनिक्षेप
पूर्वक समजी शके छे तेने भावस
प्रगटे छे. सातनय चार निक्षेप
प्रमाणोथी षड्द्रव्य, नवतत्त्व आदि
पूर्वक स्वरूप अवबोधि जे तत्त्वोन
करवो तेने भावसम्यक्त्व कथे

व्यवहारसम्यक्त्व–ज्ञान
सप्तषष्ठिभेदशील

श्रद्धा अने चरणथी सम्यक्त्वना सहज भेदनु जे झीलने करवु तेने-व्यवहार सम्यक्त्व कहे छे. सम्यक्त्वना सहज धामनी संज्ञायथी तेनुं विशेष स्वरूप अवबो-धर्यु शुद्ध देवगुरु धर्मनी आराधना करवी, सिद्धान्तानु श्रवण करवुं, अने देवगुरुनु पूजन करवुं वगेरे व्यवहारना व्यवहारसम्यक्त्वमां समावेश थाय छे. जैन धर्माना जे जे व्यवहार वह कारणो छे तेओनी प्रवृत्ति वरे प्रवृत्त थवुं तेने व्यवहारसम्यक्त्व कहेवामां आवे छ. देवगुरु धर्मनी श्रद्धाने व्यवहारथी जे धारण करवी तेने व्यवहार सम्यक्त्व कहेवामां आवे छे-व्यवहारसम्यक्त्वथी जैन शासननी सेवा कराय छे. व्यवहारसम्यक्त्वनु साधन करतां निश्चयस-

म्यक्त्व प्राप्त थाय छे माटे व्यवहार सम्यक्त्व प्रवृत्तिनो आदर करवो निश्चयसम्यक्त्वना जे जे व्यवहारहेतुओ छे तेनी रची प्रवृत्तिने व्यवहारसम्यक्त्व कहे छे.

निश्चयसम्यक्त्व–

निच्छयओ सम्मत्तं, नाणाइमयप्पसुद्धपरिणामो, इअर पुण तुह समए, भणिअं सम्मत्तहेउहिं ॥

निश्चयतो ज्ञानादिमयात्मशुद्धपरिणामः निश्चयसम्यक्त्वम् ॥

निश्चयथी ज्ञानदर्शन चारित्रमय आत्म शुद्धपरिणामने निश्चयसम्यक्त्व कहे छे ज्ञानदर्शन अने चारित्रसछलितपरिणामने

निश्चयसम्यक्त्व कहे छे. तथा एने भावचारित्र कहे छे भावचारित्रने निश्चयसम्यक्त्व केवी रीते कहेवाय ? तेना उत्तरमा जणाववामा आवे छे के **भावचारित्रस्यैव निश्चयसम्यक्त्वरूपत्वात्** भावचारित्रने निश्चयसम्यक्त्वरूपत्व छे, अतएव मिथ्याचारनिवृत्तिरूप कार्यनो तेथी सद्भाव छे. तो आ प्रमाणे निश्चयसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहेता श्रेणिक कृष्ण वगेरेने निश्चयसम्यक्त्व घटी शके नहि ? उत्तरमां कहेवानुं के श्रेणिक कृष्णादिकने निश्चयसम्यक्त्व नथी **अप्रमत्तसयतानामेव तद्व्यवस्थितेः** सातमा गुणस्थानकवर्ति अप्रमत्त साधुओने निश्चयसम्यक्त्व होय छे. कारण के सातमा गुणस्थानकवर्ति अप्रमत्त साधुओने शुद्धात्म

ज्ञानदर्शन चारित्र परिणति होय छे. आचारांगसूत्रमा अप्रमत्त साधुओने निश्चयसम्यक्त्व कह्युं छे. तत्पाठः—

जं सम्मति पासह, तं मोणति पासह, जं मोणति पासह तं सम्मतिपासह ॥ १ ॥ ण इमं सक्क सिढिलेहिं अदिज्जमाणेहिं गुणासाएहिं वकसमायारेहि पमत्तेहिं गारमावसतेहिं मुणी मोणं समादाय, धुणे कम्मसरीरगं, पंतलुहं च सेवंति धीरा सम्मत्त दंसिणोत्ति ॥१॥

जे सम्यक्त्व छे ते चारित्र छे, अने जे चारित्र छे ते सम्यक्त्व छे. आ सू-

अनी टीका श्रीशीलांगाचार्ये करी छे तेमा अप्रमत्त साधुने निश्चयसम्यक्त्व कथ्यु छे. जे निश्चयसम्यक्त्व छे तेने भावचारित्र कथ्यु छे, अने ते सातमा गुणस्थानकवर्ति साधुओने होय छे. ज्ञानी ध्यानी समाधिवंत साधुने निश्चयसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे.

विशुद्धचारित्रीगाने कारकसम्यक्त्व कथ्यु छे पण ते बाह्य चारित्र क्रियारूप छे, अने निश्चयसम्यक्त्व तो आत्मानी शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र परिणति रूप छे, माटे कारकसम्यक्त्व अने निश्चयसम्यक्त्वमां ए प्रमाणे भेद जाणवो निश्चयसम्यक्त्वने आश्रयी सिध्धान्तोमां प्रशमादिनु लक्षणपणुं कथ्युं छे अप्रमत्त साधुओने जेवु अत्यन्त ज्ञानादि शुध्धात्मपरिणाम वडे निश्चय सम्य-

क्त्व प्राप्त थाय छे तेथी कृष्ण अने श्रेणिक वगेरेने निश्चयसम्यक्त्व घटतुं नथी. कारण के तेओमां निश्चयसम्यक्त्व लक्षणोनी उत्पत्तिनो अभाव छे. चोथागुणस्थानकमां क्षायिकसम्यक्त्व प्राप्त थइ शके छे परंतु निश्चय सम्यक्त्व के जे भावचारित्र स्वरूप छे ते चोथा गुणस्थानकमां प्राप्त थइ शकतुं नथी, दीक्षा चारित्र लेवानो जे हृदयमां भाव थाय छे तेने भावचारित्र कहेवामां आवतुं नथी. परंतु आत्मा ज्यारे दीक्षा अंगीकार करी साधुनां व्रतो पाळतो छतो सातमा अप्रमत्त गुणठाणाना विशुध्ध ज्ञान दर्शन चारित्र परिणाम वडे परिणमे छे. त्यारे तेने भावचारित्रनी प्राप्ति कथवामां आवे छे, अने ते भावचारित्र मौनेनि [illegible] , कथवामां आवे छे.

श्री हरिभद्रसूरिए एज प्रमाणे कह्यु छे.

निच्छयसम्मत्त वाहिगिच्च सुत्तभ-
णिअनिउणरूव तु । एव विहो
णिओगो—होइ इमो हत्त वण्णुत्ति॥

ज्ञानादिमय इत्यस्यायमर्थ. ज्ञाननये ज्ञानस्य दशाविशेष एव सम्यक्त्व क्रियानये च चारित्ररूप, दर्शननये तु स्वतन्त्र व्यवस्थितमेव इति ॥ शुद्धात्मपरिणामग्राहिनिश्चयनये तु

आत्मैव दर्शनज्ञानचारित्राण्यथवा यतेः यत्तदात्मक एवैष—शरीर-

मधितिष्ठति ॥

आ प्रमाणे निश्चयनयसम्यक्त्वनुं स्वरूप अवबोधवुं. शुद्ध ज्ञानदर्शन चारित्र परिणति रूप आत्मा तेज निश्चयसम्यक्त्व छे बाह्य रागादि संकल्प विकल्प रहित निरुपाधिमय शुद्धात्म बोध स्थिरता, लीनता तन्मय परिणति तेज निश्चय सम्यक्त्व अवबोधवुं.

आगमसारकर्ता देव-गुरु अने धर्मनी श्रद्धाने व्यवहारसम्यक्त्व कहे छे, अने आत्मा तेज देव, आत्मा तेज गुरु अने आत्मा तेज धर्म एवी श्रद्धाने निश्चयनय सम्यक्त्व कथे छे. प्रश्नोत्तरसमचिन्तामणिमां शेठ अनुपचंद मलुकचंद जणावे छे के उपशम सम्यक्त्व-क्षयोपशम सम्यक्त्व अने क्षायिक सम्यक्त्व तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. आ प्र

माणे तेओ निश्चयसम्यक्त्वनी व्याख्या करे छे पण तेनो प्रवचनसारोद्धारवृत्ति–नवपद प्रकरणवृत्ति–धर्मसंग्रहवृत्ति–आचारांगसूत्र टीका वगेरेमां कथेला निश्चयसम्यक्त्वनी साथे मतभेद देखाय छे. नवपदप्रकरणवृत्ति, धर्मसंग्रह वगेरेमां क्षायिक समकितने निश्चय समकितथी भिन्न गण्युं छे अने श्रेणिकने क्षायिक सम्यक्त्व छतां निश्चय सम्यक्त्व नथी एम स्पष्ट कथ्युं छे. आगमसारना कर्ताए जे निश्चय सम्यक्त्वनी व्याख्या करी छे ते पण उपरनी व्याख्याथी भिन्न पडे छे तो पण अनुभवनी अपेक्षाए अप्रमत्त साधुओने जे निश्चय सम्यक्त्व कथ्युं छे तेनी साथे संबंध कथंचित् बधबेसतो आवे छे. अप्रमत्त साधुओ, निश्चयनयनी अपेक्षाए पोताना आ-

त्माने देव-गुरु मानीने अने तेने शुद्ध धर्मरूप मानीने ते सत्ताए तेनु ध्यान करे छे, तेथी तेओने शुद्धात्मश्रद्धानपरिणतियोगे निश्चय सम्यक्त्व होय छे. मारो आत्मा तेज देव गुरु धर्मरूप छे, एवुं वर्तनमा मूर्तीने तेनो वास्तविक शुद्धात्म अनुभव निश्चय करवो, ते अप्रमत्त दशा विना अन्य, केज नीचेना गुणस्थानकोमा रहेला जीवो छे तेओने आवी शके नहि, एम अनुभवनिश्चय शुद्धात्मा परिणतिए तेनो भावाथ समजी निश्चय सम्यक्त्वमा ते व्याख्या समावेश करी मतभेद दुर करी शकाय छे. आगमसारकर्ता श्रीमद् देवचंद्रजीए जे दृष्टिथी निश्चय सम्यक्त्वनु लक्षण कर्युं छे तेनो सत्य भावार्थ तो तेओ जाणे परतु सापेक्ष दृष्टिए सिद्धान्त शैलीए ए प्रमाणे घटा ता तेमना कथनमा विरोध जणातो नथी. देव गुरु अने

धर्मरुप जेनो आत्मा परिणम्यो छे अने तेनो शुद्धानुभव करीने आत्मानी शुद्ध ज्ञानादि परिणतिने सेवे छे तेने निश्चय सम्यक्त्व प्रगटे छे एवो वास्तविक अनुभवार्थ ग्रहतां सापेक्षत्व व्याख्याए निश्चय सम्यक्त्व ग्रहाय छे.

सम्यक्त्व.

संख्यात वर्षायुष्क संज्ञि पंचेन्द्रिय तिर्यंचो तथा स्त्रीओ तथा भवनपति व्यंतर ज्योतिषीने क्षायिक समकित नथी. तेओने ते भवमा क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न थतु नथी. संख्याता वर्षायुष्कवाळा मनुष्यने क्षायिक सम्यक्त्वनो आरंभ थाय छे माटे संख्याता वर्षायुष्कवाळा संज्ञिपंचे-

स्माने देव-गुरु मानीने अने तेने शुद्ध धर्मरूप मानीने ते सत्ताए तेनु ध्यान करे छे, तेथी तेओने शुद्धात्मज्ञानपरिणतियोगे निश्चय सम्यक्त्व होय छे. मारो आत्मा तेज देव गुरु धर्मरूप छे, एवु वर्णनमा मूकीने तेनो वास्तविक शुद्धात्म अनुभव निश्चय करवो, ते अप्रमत्त दशा विना अन्य, के जे नीचेना गुणस्थानकोमा रहेला जीवो छे तेओने आवी शके नहि, एम अनुभवनिश्चय शुद्धात्मा परिणतिए तेनो भावार्थ समजी निश्चय सम्यक्त्वमा ते व्याख्या समावेश करी मतभेद दुर करी शकाय छे. आगमसारकर्ता श्रीमद् देवचन्द्रजीए जे दृष्टिथी निश्चय सम्यक्त्वनु लक्षण कथ्यु छे तेनो सत्य भावार्थ तो तेओ जाणे परतु सापेक्ष दृष्टिए सिद्धान्त शैलीए ए प्रमाणे घटा ता तेमना वचनमा विरोध जणातो नथी. देव गुरु अने

मेरूप तेनो आत्मा परिणम्यो छे अने तेनो
शुद्धानुभव करीने आत्मानी शुद्ध ज्ञानादि
परिणतिने सेवे छे तेने निश्चय सम्यक्त्व
प्रगटे छे एवो वास्तविक अनुभवार्थ प्र-
हतां सापेक्षत्व व्याख्याए निश्चय सम्यक्त्व
ग्रहाय छे.

सम्यक्त्व.

संख्यात वर्षायुष्क संज्ञि पंचेन्द्रिय ति-
र्यंचो तथा स्त्रीओ तथा भवनपति व्यंतर
ज्योतिषीने क्षायिक समकित नथी. तेओ-
ने ते भवमां क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न
थतुं नथी. संख्याता वर्षायुष्यवाळा मनु-
ष्यने क्षायिक सम्यक्त्वनो आरंभ थाय छे
माटे संख्याता वर्षायुष्कवाळा संज्ञिपंचे-

न्द्रिय तिर्यंच स्त्रीओ अने उपर्युक्त त्रण प्रकारना देवताओने पारभविक क्षायिक सम्यक्त्व पण होतुं नथी. कारणके क्षायिक सम्यग्दृष्टिनो तेओमां उत्पाद थतो नथी. उपर्युक्त सख्याताायुष्क संज्ञिपंचेन्द्रिय तिर्यंच स्त्रीओ तथा त्रण प्रकारना देवताओने उपशम अने क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय छे एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अने असंज्ञिपंचेन्द्रिय जीवोने ते भव वा परभवनी अपेक्षाए त्रण सम्यक्त्वमांथी एक पण सम्यक्त्व होतुं नथी. बादर, पृथ्वी, जळ, वनस्पति, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय जीवो अने असंज्ञिपंचेन्द्रियोमां पर्याप्तावस्थामां पारभविक सास्वादन सम्यक्त्व अने पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रियमां तद्भविक प्रमाद

छे. सूक्ष्म एकेन्द्रिय बादर तेज वायुमां सम्यक्त्ववंलेश्यावंतोना उत्पादनो अभाव छे माटे सास्वादन तेओमां नथी, ए कर्मग्रन्थिक अभिप्राय छे. सूत्राभिप्रायवडे तो पृथ्वि आदि एकेन्द्रियोने सास्वादन सम्यक्त्व नथी.

यदुक्त–प्रज्ञापनायाम्, पुढविकाइयाणं पुच्छा गोयमा पुढविकाइया नो सम्मदिट्ठी नो सम्मामिच्छदिट्ठी एव जाणवप्पइकाइया–॥ इति प्रवचनसारोद्धारे १४९ द्वारे ॥

पञ्च सम्यक्त्वानां कालनियममाह–

अतमुहुत्तोवसमो, छावलिसासाणवेयगोसमओ, साहियतित्तीसायरखइयो दुगुणो खओवसमे ॥

उपशमनो अन्तर्मुहूर्तप्रमाण छे, सास्वादन नो उत्कृष्ट छ आवलिका मात्र, वेदकनो समय मात्र, क्षायिकनो तेत्रीस सागरोपम अने क्षयोपशमनो छासठ सागरोपमनो काळ जाणवो सर्वार्थसिद्धादिनी अपेक्षाए क्षायिक सम्यक्त्वनी तत्रीस सागरोपमनी स्थिति जाणवी बावीस सागरोपम स्थितिवाळा देवपणे त्रण वार उत्पन्न थवाथी क्षयोपशम सम्यक्त्वनो छासठ सागरोपमनो काळ सिद्ध थाय छे अने तेमा नरभवनु आयुष्य अधिक जाणवुं

उक्कोस सासायण-उवसमिया हुति पचवाराओ, वेयग खयगा इक्कसि-असखवारा खओवसमो ॥

आखा भवचक्रमां जीवने सास्वादन

पामतो नथी.

उक्त च शतकबृहच्चूर्णौ—

उवसमसम्मदिट्ठी—अतरकरण ठिओ कोइ देसविरयपि लभइ कोइ पमत्तभावपि॥ सासाइणो न किंपि लहे इति ॥

पुजत्रयसक्रमश्च कल्पभाष्ये एवमुक्त. मिथ्यात्वदलिकान् पुद्गलानाकृष्य सम्यग्दृष्टिः प्रवर्धमानपरिणामः सम्यक्त्वेमिश्रे च सक्रमयति। मिश्रपुद्गलाश्च सम्यग्दृष्टि सम्यक्त्वे मिथ्यादृष्टिश्च मिथ्यात्वे

सम्यक्त्वपुद्गलास्तु मिथ्यात्वे संक्रमयति न तु मिश्रे ॥

प्रवर्धमानपरिणामी सम्यग्दृष्टिजीव, मिथ्यात्व पुद्गलोने आकर्षी सम्यक्त्वमा अने मिश्रमा संक्रमावे छे, सम्यग्दृष्टि जीव मिश्र पुद्गलोने सम्यक्त्वमां संक्रमावे छे अने मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वमा संक्रमावे छे तथा मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्व पुद्गलोने मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे पण मिश्रमां नहीं:

मिच्छत्तंमि अखीणे तिपुंजा सम्मदिट्ठिणे नियमा खीणंमि उ मिच्छत्ते-दुएगपुंजी व खवगोवा ॥

मिथ्यात्व अक्षीण थये छते सम्यग्दृ-

ष्टियो नियमा त्रिपुंजवाळा होय छे. मिथ्या त्व क्षीण थये छते बे पुंजी होय छे अने मिश्र क्षीण थये छते एक पुंजी होय छे अने सम्यक्त्वमोहनीय क्षीण थये छते क्षायिक सम्यक्त्ववंत थाय छे.

सम्यक्त्वपुद्गला अशोधितमदनकोद्रवस्थानीया विरुद्धतैलादिद्रव्यकल्पेन कुतीर्थिकसंसर्गकुशास्त्रश्रवणादिमिथ्यात्वेन मिश्रिता सन्त तल्लक्षण एवमिथ्यात्व स्यु यदापि प्रपतित सम्यक्त्व पुन सम्यक्त्व लभते तदापि अपूर्वकरणेन पुञ्जत्रय कृत्वा
निवृ... सम्यक्त्व पुञ्ज एव

गमना द्रष्टव्य । न तु तदा अपूर्वकरणस्य पूर्वलब्धस्यैव लाभात् कथ अपूर्वतेति चेदुच्यते अपूर्वमिवाऽपूर्वं स्तोकवारमेवलाभादितिवृद्धा.सैद्धान्तिकमत चेतत्–सम्यक्त्वप्राप्ताविव देशविरतिसर्वविरत्योः प्राप्तावपि यथाप्रवृत्तापूर्वकरणे भवतो नत्वनिवृत्तिकरणअपूर्वकरणाद्वासमाप्तावनन्तरसमये एवतयोर्भावात् । देशसर्वविरत्यो प्रतिपत्तेरनन्तरमन्तर्मुहुर्तं यावदवश्य जीवः प्रवर्धमानपरिणामस्तत उर्ध्वं त्वनियमः कोऽपि प्रव

धमानपरिणाम एव कोऽपि स्वभा
वस्थ कोऽपि हीनपरिणाम ये चा
भोगविनैव कथचित् परिणामहासा
शविरते सर्वविरतेर्वा प्रतिपतति ता
स्ते अकृतकरणा एवपुनस्तां लभन्
ये स्वाभोगत प्रतिपतिता आभोगे
नैव मिथ्यात्व गतास्ते जघन्यतोऽत
मुहुर्तेनोत्कर्षत प्रभूतकाले यथोक्त
करणपूर्वकमेव पुनस्ता ते लभन्
इत्युक्त कर्मप्रकृतिवृत्तौ– ॥

सैद्धान्तिक मत प्रमाणे विराधित सम्य
क्त्वाळो जीव ग्रहण करेल सम्यक्त्वन्

छे ते देवगति वा नरकगतिमां जाय छे त्यां
ते जीव तद्भवांतरित त्रीजा भवमां सिद्ध था
छे. अने पूर्वं बद्धायुष्क क्षायिक सम्यक्त्
तिर्यंच वा नरकगतिमां जाय छे तो

असङ्ख्यासख्यवर्षायुष्केष्वेव न
सख्येयवर्षायुष्केषु तद्भवान्तरं
देवभवे ततो नृभवे सिद्धयती
चतुर्थभवे मोक्ष अवश्य असंख्याता

र्षायुष्कोमां उपजे छे पण विचारवु सख्या
वर्षायुष्कवाळाओमां नहि. ते भव पश्चात् दे
भव अने त्यांथी मनुष्य भवमां सिद्ध थाय
जेणे पूर्वे भवनु आयुष्य बांध्यु नथी, ए
कोइ मनुष्य क्षायिक सम्यक्त्व पामे छे तो

[प्रव]था क्षपकश्रेणि आरोही सिद्ध थाय छे.

एक जीव अने नाना जीवनी अपेक्षाए
[उप]योगनो उपयोग जघन्यथी अने उत्कृष्टथी
[अन्त]र्मुहूर्तनो जाणवो, अने क्षायोपशम रूप तेनी
[स्थि]तिनो एक जीवने जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने
[उत्कृ]ष्टतो पूमत्र अधिक छासठ सागरोपमनी
[स्थि]त छे तेना उपर सम्यक्त्वथी अमच्युत जीव
[सि]द्ध थाय छे. नाना जीवने आश्रयी तो सर्व-
[का]ल जाणवो.

कोइ सम्यक्त्वनो त्याग करे छते पुनः
[ज्ञा]ना आवरणना क्षयोपशमथी अन्तर्मुहूर्त मात्रमा
[पु]नः सम्यक्त्वने पामे छे माटे सम्यक्त्वनुं
[अन्]तर् जघन्यथी तो अन्तर्मुहूर्त छे अने आशा
[बहु]मचुर जीवनी अपेक्षाए तो उत्कृष्टथी

अपार्ध पुद्गल परावर्त जाणवु. कह्युं छे के

तित्थयरपवयणे सुअ
आयरिअ गणहर महड्ढीअ
आसायतो वहुसो——
अणतससारिओ होइ ॥

नाना जीवोनी अपेक्षाए तो सम्यक्त्व आंतरानो अभाव छे.

चतुर्दश पूर्व वा दशपूर्वेतु परिपूर्ण ज्ञान छे तेने नियमाए सम्यक्त्व होय धारीना के जे किञ्चित् न्यून दश पूर्व धरो है छे तेओने सम्यक्त्वनी भजना जाणवी तेओ •क्त्व होय वा मि॰यात्व पण होय. यदुक्त

वोदसन्सयअभिन्ने
नियमासम्मं तु सेसए भयणा
मति ओहीविवच्चासोवि
होंति सिच्छे नउणसेसे ॥

थोंसमदशपूर्वी अने अभिन्न चतुर्दश
वीने नियमाए सम्यक्त्व पण छे, पण शेषुं
त्यारत्व ते स्पष्ट जणाव्युं नथी. अन्य ते थकी
पूर्वपूर्वीमान भजना जाणवी. अभव्य दशपूर्व
रत द्रव्यश्रुतना चारित्र अंगीकार करी न
त्याग करे छे, पण तेने सम्यक्त्वनी प्राप्ति
थी नथी. चारित्रिक क्रियाथी अभव्यजीव
नव ग्रैवेयक सुधी जाय छे—

आ काळमा सम्यक्त्वनी प्राप्ति जेने थाय छे, तेने उत्तम भव्य जीव जाणवो. ॥ **समत्तंमि उ लद्धे, पलिअपुहुत्तेण सावओ हुज्जा। चरणोवसमखयाण, सागरसखतरा हुंति ॥** सम्यक्त्व प्राप्त थया बाद उत्तर देशविरत्यादि गुणोनी प्राप्ति थाय छे गुरुनी विनय भक्तिवडे जे आराधना करे छे, तेने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे क्षयोपशमादि सम्यक्त्व योगे तीर्थंकर नाम कर्म बांधी शकाय छे. वीश स्थानकनी आराधना करनार जीव तीर्थंकर नाम कर्म बांधे छे. सम्यक्त्व प्राप्त थया पश्चात धर्मक्रियानी सफलता छे. देव, गुरु, धर्मनो रागी अने मध्यस्थ

मन्दरूपायी जीव सम्यक्त्वनी माप्तिनो अधिकारी बने छे. मार्गानुसारी जीव सम्यक्त्वनी माप्ति करवाने अधिकारी बने छे. जेना मनमां सम्यक्त्वनी माप्ति माटे अत्यंत तीव्र जिज्ञासा होय, तेणे मार्गानुसारी मथम थवु जोइए. मार्गानुसारीपणु आव्या बाद सम्यक्त्वनी माप्ति थाय छे. आत्मज्ञानी आत्माना स्वरूपने अरबोधी आत्माना शुद्ध गुण पर्यायमां रमणता करी समाधिवंत बनी अत्यंत अतीन्द्रिय आनन्दना अनुभवे सम्यक्त्वनी माप्ति करे छे. आत्माना सहजानन्दनो भान ज्यां छे त्यां सम्यक्त्व छे. देशविरति अने सर्वविरतिगुण मग्न करवाने माटे बंने खास फाळनी होय, तेण मथम सम्यक्त्वनी माप्ति करवी गीतार्थ

आत्मज्ञानी ध्यानी सद्गुरुना चरणकमल सेववाथी सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे.

उपर प्रमाणे सम्यक्त्वना जे जे भेदो कह्या छे, तेनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो एज उत्तम पुरुषोनुं कर्तव्य छे. आगमोनो नय, निक्षेप, प्रमाणोथी अनुभव करीने राग द्वेष रहित आत्माना समभाव स्वरूपमा परिणमवु एज परमसाध्य कर्तव्य छे. समभावे परिणमता आत्मा केवल ज्ञान प्राप्त करी मोक्ष पामे छे

सेयवरो वा आसवरो वा
बुद्धो वा अहव अन्नो वा
समभाव भावी अप्पा—
१ मुख्व न सदेहो ॥

श्वेतांबर वा दिगंबर, बुद्ध अथवा वेदांती-वैदिक धर्मी, मुसल्मान, ख्रीस्ति वगेरे गमे ते होय परन्तु समभावे आत्माने भावी समभावे निश्चयतः परिणमी समभावी थाय छे ते मोक्ष पामे छे. ते कर्मावरणनो क्षय करी सम्यक्त्वादिने प्राप्त करी परिपूर्ण गुणमयी बनी सिद्ध बुद्ध परमात्मा थाय छे. सर्व सिद्धान्तनो सार ए छे के सम्यक्त्वादिनी प्राप्ति करी आत्माने समभावे भाववो. समभावे परिणमता कषायनी मन्दताए अने क्षीणताए निसर्ग सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे अने सकल कर्मने निवारी परिपूर्ण सिद्ध बुद्ध बने छे. समभावे परिणमता सहजानन्दयोगे सम्यक्त्वनी प्राप्तिनो अनुभव करी शकाय छे.

आगमसार, नयचक्र आदि ग्रंथोनी सहायताथी ते ग्रंथोना अनुसारे भव्यजीवोना उपकारार्थे षट्द्रव्यविचारग्रन्थ बनाव्यो छे तेमां कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध भाषण थयु होय, लख्यु होय, ते त्रिविधे करी मिच्छामि दुक्कड दउ छु. आ ग्रंथमां विभ्रम चित्तथी कोइ दोष थयो होय तो ते सुधारवा पंडितपुरुषोए कृपा करवी.शुभे यथाशक्ति यतनीय ए न्यायने अनुसरी में उद्यम कर्यो छे, तेथी हु मारी महेनत परोपकार थये छते सफल मानु छु, आ ग्रंथ पंडित पुरुषोने योग्य छे आ ग्रंथ वांची व्यवहार मार्गे चालीं हृदयमां निश्चय दृष्टि राखशे ते पामशे.

दुहा.

अध्यातमरस झीलजो, ए षड् द्रव्य विचार,
जे भवी प्राणी धारशे, ते लहेशे सुखसार. १
जन्म मरणथी आतमा, रझल्यो काळ अनंत,
जिनवाणी षड् द्रव्यनी, सुणता होवे संत. २
सात नयोथी आतमा, सप्तभंगीए धार,
आतमस्वरूप विचारशे, ते लहेशे भवपार. ३
ओगणीश अट्ठावननी, विक्रम साल रसाल,
फागुण मासनी पंचमी, रुडो शुक्रवार. ४
पादरा नगरे शोभता, शांतिनाथ भगवंत,
पादपद्म तेना नमी, ग्रंथ कर्यो गुणवंत. ५
विनयवंत त्रिवेकवंत, श्रावक मोहनभाइ,
हीमचंद सुत कारणे, ग्रंथ कर्यो सुखदायी ६
तपगच्छ गगन दिवाकर, हीरविजय सूरिराय,
सहेजसागर तासशिष्य, पदवी उपाध्याय. ७

पाट परंपर तेहनी, रविसागर गुरुराय,
सुखसागर शिष्य तेहना, विनयवंत कहाय ८
तास चरणने सेवतो, बुद्धि कहे [illegible] एम,
भणेगणे जे धारशे, ते पामे सुखखेम. ९
ज्यां लगे शशी भानु रहे, जगमा करे प्रकाश,
तावत् भविजन भाजुतम, थइने करो [illegible] १०
ए षट् द्रव्य विचार ग्रन्थ, जिनवाणीथी रसाल
भणशे गणशे ते भवी, लहेशे मङ्गलमाल.॥ ११ ॥

संपूर्णम्

ॐ शान्ति ३